भारतीय माँ गाय

प्रसंग

28 वां
अनेक कल्याणक भूमि वर्षायोग
2026

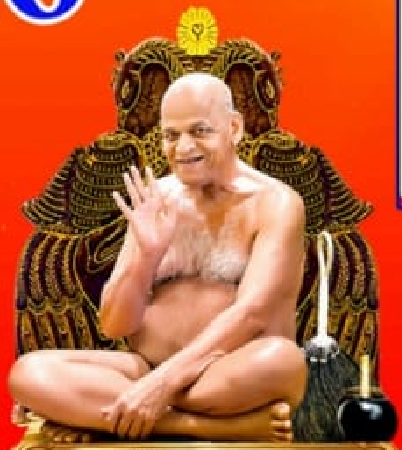

आशीर्वाद प्रदाता :- परम पूज्य
आचार्य श्री 108 समवसागर जी महाराज

आशीष छांव :- महासमाधि धारक परम पूज्य
आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज

प. पू. मुनि श्री 108
धर्म सागर जी महाराज

पुण्यवर्धन
सान्निध्य

प. पू. मुनि श्री 108
भाव सागर जी महाराज

चातुर्मास स्थल- श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र भेलूपुर (काशी) वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

आयोजक

आयोजक- श्री दिगम्बर जैन समाज(काशी)वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

कृति :- भारतीय माँ गाय

आशीष छांव :-

❖ समाधिस्थ सर्वश्रेष्ठ साधक, बाल ब्रह्मचारी संघ के नायक मूकमाटी
❖ रचयिता परम पूज्य आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज

आशीर्वाद

प. पू. आचार्य श्री 108 समयसागर जी महाराज

मार्गदर्शन

प. पू. मुनि श्री 108 धर्मसागर जी महाराज

संकलन कर्ता :-

प. पू. मुनि श्री 108 भावसागर जी महाराज

ग्राफिक्स :-

सिंघई नितिन जैन
अरिहंत कम्प्यूटर्स
टीकमगढ़ म.प्र.
82260 60609

प्रथम संस्करण

10 अक्टूबर 2026
1000 प्रति

मुद्रक

पारस प्रिंटर्स, भोपाल

पुण्यार्जक:-

1 श्रीमती ममता – श्री तेज कुमार गंगवाल, श्री प्रीयेश कुमार-श्रीमती गरिमा मिष्टी , मिविका गंगवाल फ्लोर फूडस एल.एल.पी. इंदौर (म.प्र.)

2 **पाटनी परिवार** आरके मार्बल वंडर सीमेंट परिवार, राजस्थान

3 **महावीर प्रसाद**, विमल कुमार,आशीष जैन,हर्षित जैन, अनुभय जैन, विमल रेडियो, मुरैना (मध्य प्रदेश)

4 **मातेश्वरी जी** श्रीमती राजकुमारी जी, श्री प्रेमचंद जैन (प्रेमी) , डॉ. श्री रमेशचंद जैन, श्री दिनेश कुमार जैन, श्री महेंद्र कुमार जैन, श्री संजय कुमार जैन, अरिहंत, अक्षय, अर्हन, हितेंद्र जैन (समस्त प्रेमी परिवार) कटनी, सतना, बिलासपुर, रायपुर, भोपाल

5 **विवेक कुमार जैन**
जेएम भी परिवार इंदौर(मध्य प्रदेश)

6 **श्री सिद्धार्थ कुमार जैन** , डॉ श्रीमती शिखा जैन ,लाभांशी ,हितांशी भोपाल (मध्य प्रदेश)

7 श्रीकांत जैन, श्री मयंककुमार जैन, श्रीमती मेहा जैन, श्री अंबर कुमार जैन, श्रीमती प्रियंका जैन, आनम, अग्रिम, प्रवर जैन
फर्म - गुढ़ा कम्प्यूटर्स मंडी बामोरा, आशा इंटरनेशनल चंडीगढ़

प्राप्ति स्थान:-

नरेश जैन (गोपाल एग्रो प्रोडर्क्ट, सी.एम. मसाले), राजनांदगांव
मो.: 9425238271

इंजी. संजीव नायक, देवरी जिला-सागर म.प्र.
मो.: 9893991244

प्रदीप पाटनी "रत्नाकर" जयपुर
मो.: 9829015819

सौरभ चौधरी (पनागर) जबलपुर (म.प्र.)
मो.: 9131206286, 9981858987

भरत जैन, उदय नगर इंदौर (म.प्र.)
मो.: 9926041963

सुमित जैन सोमी (बैंक) सिवनी (म.प्र.)
मो.: 9407014510

विशेष सहयोग

रानू भैया नोहटा	78790 68125
डॉ. विवेकानंद जैन, बी एच यू वाराणसी	9450538093
महावीर जैन भोपाल	6260466070
प्रशीश जैन बांसवाड़ा	9414104059
प्रांशु जैन	7440574558
संभव जैन भोपाल	62601 51350
पर्व जैन	9993257532
आर्यन जैनं (ऋषभ) वाराणसी	9140641323

समाधिस्थ परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से चर्चा करते हुए
माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी।

श्री दिगम्बर जैन तीर्थ, डोंगरगढ़, जिला- राजनांदगांव, छत्तीसगढ़।

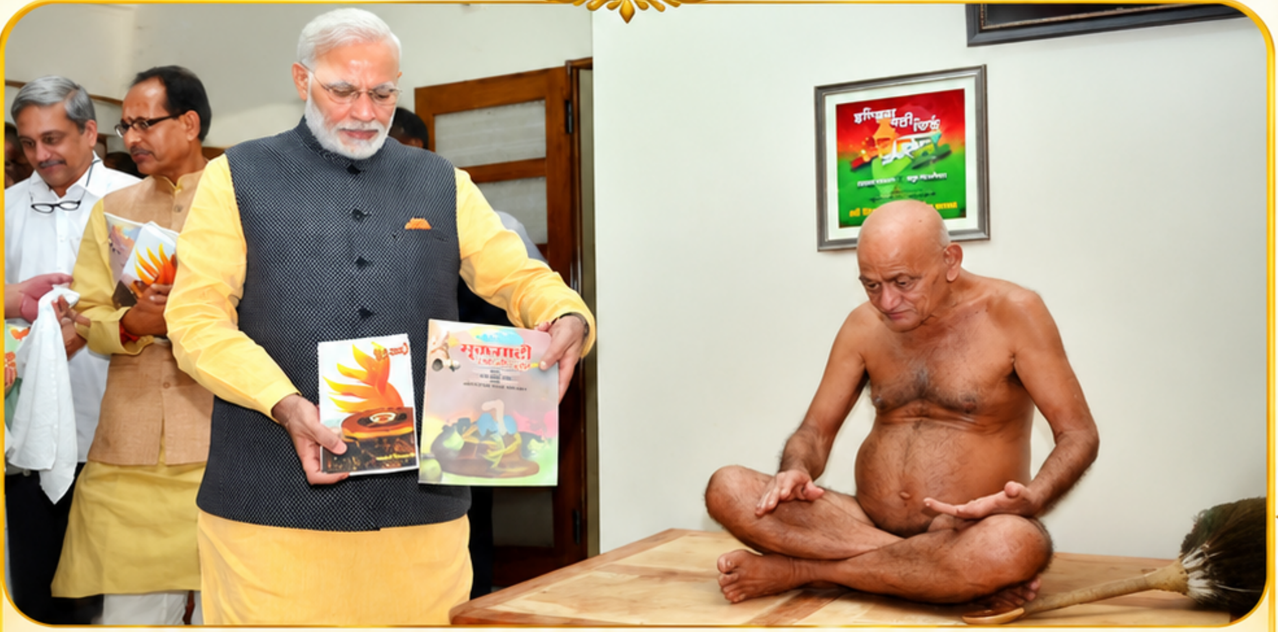

समाधिस्थ परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के दर्शन करते हुए
माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी।

भोपाल, मध्य प्रदेश।

अनुक्रमणिका

भारतीय माँ गाय

क्रमांक	विषय / शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1	गौमाता — हमारी संस्कृति, हमारी पहचान	1
2	गाय धन है	2
3	गाय की बहु-उपयोगिता	3
4	गौशाला ऐसी होनी चाहिए	4
5	साहित्य में गाय का महत्व	5
6	सबकी रक्षा, गाय की सुरक्षा	6
7	कैंसर को पनपने से रोकता है गाय का घी	7
8	खबरें गाय की	8
9	गाय की सभी वस्तुएँ उपयोगी हैं	9
10	गाय से स्थान चमक उठता है	10
11	बिना गाय के परिवार अधूरा	11
12	गाय रसायन शाला है	12
13	गाय का ऋणी है मनुष्य	13
14	गाय राष्ट्र को बनाती है	14
15	गाय बिटामिनों का कारखाना है	15
16	गाय राष्ट्र की संपत्ति है	16
17	गाय दया की मूर्ति है	17
18	गाय मनुष्य की सर्वश्रेष्ठ हितैषी हैं	18
19	गाय मिल्क-मोनो ट्रेक्टर है	19
20	गाय हिंदुस्तानी बैंक जैसी है	20
21	गाय के बिना घर श्मशान समझा जाता है	21
22	गाय के पदार्थ राष्ट्रीय पेय हैं	22
23	गाय दया की मूर्ति हैं	23
24	गाय जीवन है	24
25	गाय दुग्ध भुवन की देवी है	25
26	गाय हमारी संस्कृति का प्राण है	26
27	गाय अमूल्य रत्न हैं	27
28	गाय हिन्दुस्तानी बैंक जैसी है	28
29	गाय भारत का जीवन है	29
30	गाय सभी का पोषण करती है	30
31	गाय से सभ्यता का विकास होता है	31
32	मानव उन्नति गौरक्षा पर ही निर्भर है	32
33	दयोदय महासंघ	33

गौ माता
हमारी संस्कृति हमारी पहचान

गाय केवल एक पशु नहीं,
यह भारतीय संस्कृति, करूणा,
अहिंसा और संस्कृति का
जीवंत प्रतीक है।

गौ सेवा
गौ रक्षा
जीव दया
ही सच्चा धर्म है।

गौ माता पर भावपूर्ण स्लोगन

1. गौ माता का करो सम्मान, यही है भारत की पहचान।
2. गौ सेवा अपनाएँ, जीवन को पुण्यमय बनाएँ।
3. जहाँ गौ माता का सम्मान, वहाँ संस्कृति का उत्थान।
4. गौ माता की सेवा करें, जीव दया के भाव भरें।
5. गौ रक्षा का लें संकल्प, करूणा बने हमारा विकल्प।
6. गौ माता है प्रेम की धारा, इनसे सुंदर जगत हमारा।
7. गाय नहीं केवल एक पशु, यह करूणा का जीवंत स्वरूप।
8. गौ सेवा है श्रेष्ठ बिधान, जीव दया है सच्चा धर्म महान।
9. गौ माता को रोटी खिलाएँ, अपने जीवन में पुण्य कमाएँ।
10. गौ माता की रक्षा हो, हर जीव के मन में करूणा हो।
11. दया धर्म का मूल है, गौ सेवा अनमोल है।
12. गौ माता का करें सत्कार, यही संस्कृति का सच्चा श्रृंगार।
13. न हो किसी जीव पर अत्याचार, यही हो हमारा संस्कार।
14. गौ माता की सेवा प्यारी, यही है संस्कृति हमारी।
15. करूणा, प्रेम और सद्भाव अपनाएँ, गौ माता की सेवा में जीवन लगाएँ।

गौ माता की महिमा

गौ माता तू बड़ी निराली,
तेरी महिमा सबसे न्यारी।
तेरी आँखों में करूणा बसती,
तेरी ममता जगे से प्यारी।।

तेरी सेवा पुण्य कमाए,
तेरा सान्निध्य सुख पहुँचाए।
जो भी जीवों से प्रेम करे,
उसके मन में दया जगाए।।

आओ मिलकर प्रण यह लें,
गौ माता का मान करें।
भूखे को भोजन, प्यासे को पानी,
हर प्राणी पर दया करें।।

गौ सेवा का संदेश

गौ माता की सेवा कर लो,
मन में करूणा का दीप जला लो।
निर्बल जीवों के दुख हरकर,
अपने जीवन को सफल बना लो।।

न धन बड़ा, न वैभव भारी,
दया से सुंदर दुनिया सारी।
जो परपीड़ा को समझ सके,
उसकी सोच है सबसे प्यारी।।

आओ जीव दया अपनाएँ,
प्रेम और सद्भाव बढ़ाएँ।
गौ माता की सेवा करके,
मानवता का धर्म निभाएँ।।

गौ माता के नाम संदेश

मूक प्राणियों की पीड़ा समझो,
उनकी आँखों की भाषा समझो।
भूख-प्यास से व्याकुल जीवों को,
प्रेम से जीने का अवसर दो।।

गौ माता को चारा देना,
उनके घावों पर मरहम रखना।
केवल पूजा ही नहीं जरूरी,
उनकी सेवा भी है जरूरी।।

जीव दया का दीप जलाएँ,
हर प्राणी को गले लगाएँ।
करूणा ही सच्चा धर्म हमारा,
प्रेम बने जीवन का सहारा।।

अहिंसा और जीव दया

न किसी जीव को कष्ट पहुँचाएँ,
न किसी का जीवन मिटाएँ।
दया, क्षमा और प्रेम अपनाकर,
अहिंसा का संदेश फैलाएँ।।

गौ माता हो या जीव कोई,
सबको जीने का अधिकार।
जीव दया के पावन पथ पर,
चलना है हमारा संस्कार।।

अहिंसा परमोधर्मः का,
जन-जन तक संदेश पहुँचाएँ।
करूणा, मैत्री और सद्भाव ले,
सुंदर संसार बनाएँ।।

दया ही धर्म है | अहिंसा ही संस्कार है | जीव रक्षा ही सच्चा उपकार है

गौ माता की सेवा में,
करूणा का संसार।

गौ माता का मान बढ़ाएँ,
जीव दया का धर्म निभाएँ।

हर जीव अनमोल है,
दया ही सबसे बड़ा मोल है।

गौ सेवा केवल परंपरा नहीं।
करूणा और संवेदना की पहचान है।
गौ माता की रक्षा का संकल्प लें,
अहिंसा के मार्ग पर आगे बढ़ें।

गाय धन है

समाधिस्थ

परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के

मार्गदर्शन, प्रेरणा, सानिध्य, आशीर्वाद से बनी

‘शांतिधारा’ दुग्ध योजना

का उद्देश्य आर्थिक नहीं, अहिंसा प्रेमियों के लिए शुद्ध सात्विक दूध, घी आदि उपलब्ध करवाना है। बीना (बारह) जिला सागर (म.प्र.) के पास लगभग 150 एकड़ जमीन में प्लांट की शुरूआत हुई है। सभी उत्पादन भारत में ‘शांतिधारा’ के नाम से विक्रय हो रहे हैं।

धर्म और अर्थशास्त्र में गोपालन का महत्व

धर्मशास्त्र तो गोवंश की महानता और पवित्रता का वर्णन करते ही हैं किंतु भारतीय अर्थशास्त्र में भी गोपालन का विशेष महत्व है। कौटिल्य अर्थशास्त्र में गोपालन और गो रक्षण का विस्तृत वर्णन है। भारत में अनादिकाल से ही सभी का मुख्य कर्तव्य गोपालन ही रहा है। प्राचीन काल में जिसके पास ज्यादा गायें होती थीं, वही संपत्ति शाली माना जाता था, गाय से यह देश मंगल का स्थान बन गया था। गाय के बिना आज अमंगल ही हो रहा है देश में। भारत के डॉ., वकील, ग्रंथकार, पत्रकार, बुद्धिजीवी, विद्वान नेता, सामाजिक कार्यकर्ता, सर्विसमैन, बिजनेस मैन, गाय के पालन में सहयोग करें यह महत्वपूर्ण जीव रक्षा का कार्य है।

गाय के अद्भुत स्वास्थ्य लाभ

- गाय पर प्रेम से हाथ फेरने से ब्लड प्रेशर ठीक हो जाता है।
- गाय की पीठ पर सूर्यकेतु स्नायु हानिकारक विकिरण को रोककर वातावरण को स्वच्छ बनाते हैं।
- हवन में घी के प्रयोग से वातावरण शुद्ध होता हैं। ओजोन की परत मजबूत होती हैं।
- गाय के रोम और निःश्वास से भी बीमारी ठीक होती हैं।
- गाय और बछड़े के रंभाने की आवाज से मनुष्य की अनेक मानसिक विकृतियाँ तथा रोग अपने आप नष्ट हो जाते हैं।
- गाय अपने सींग के माध्यम से कॉस्मिक पावर ग्रहण करती है।
- गाय के गोबर से टी.बी., मलेरिया के कीटाणु नहीं पनपते हैं।
- पहले आम के बगीचों में दूध की सिंचाई होती थी।
- गाय के दूध पदार्थों में विष को समाप्त करने की क्षमता होती है।
- गाय के शरीर में विषैले पदार्थों को पचाने की क्षमता होती है।

आज की स्थिति – हमारा विचार

आजकल गृहस्थों ने गाय रखना बंद कर दी है। कार, मकान, दुकान, कपड़े, नशे व्यसन, जुआँ, शराब आदि में पैसा बर्बाद कर रहे हैं। लेकिन एक गाय नहीं रख पा रहे हैं। गाय के दूध से कैंसर, कोलेस्ट्रॉल, हृदय रोग, कोढ़, ब्लडप्रेशर आदि बीमारियाँ ठीक होती हैं। गाय का दूध बुद्धिवर्धक होता है। 24750 मनुष्य एक गाय के जीवन भर दूध से तृप्त हो सकते हैं।

भारत की सभ्यता और गोसेवा

विनोबा भावे जी कहते थे कि

“हिन्दुस्तानी सभ्यता का नाम ही गोसेवा है।”

अवश्य पढ़ें – महत्वपूर्ण संदर्भ

‘अहा जिंदगी’ का लेख अप्रैल 2006 ‘गाय और भारत’ एवं ‘दान चिंतामणि’ एवं ‘रोमांसा ऑफ काऊ’ पुस्तक जो सर्वश्रेष्ठ पुस्तक है अवश्य पढ़ें। लगभग 8000 साल पहले सिंधु घाटी में गाय को पालना शुरू हो जाने से एक क्रांति आयी थी। इस तरह आप गाय की उपयोगिता के बारे में लोगों को बतायें प्रचार प्रसार करें।

आइए! गाय के पालन में सहयोग करें
– यह जीव रक्षा, पर्यावरण संरक्षण और मानव कल्याण का महान कार्य है।

गाय की बहु-उपयोगिता

1 गांधीजी कहते थे कि गाय पशु नहीं बल्कि **सुंदर** अर्थतंत्र है। गाय का देश की अर्थव्यवस्था में भी काफी महत्व है। गाय का दूध, घी, मक्खन, गोबर आदि महत्वपूर्ण चीजें हैं। इतना ही नहीं, गाय के गोबर और निःश्वास भी मानव-जीवन के लिए आवश्यक हैं। इस बात की पुष्टि वैज्ञानिकों ने भी अपने प्रयोगों से की है।

2 गाय के शरीर से निकलने वाली सात्विक तरंगें पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्त करती हैं तथा वातावरण में फैले रोगों के कीटाणुओं को नष्ट करती हैं।

3 गाय और उसके बछड़े के रंभाने की आवाज से मनुष्य की अनेक मानसिक विकृतियाँ तथा रोग अपने-आप नष्ट हो जाते हैं।

4 गाय की पीठ पर रोज सुबह-शाम 15–20 मिनट हाथ फेरने से रक्तचाप (रक्तचाप) नियंत्रित (संतुलित) हो जाता है।

5 गाय अपने सींग के माध्यम से कॉस्मिक पावर ग्रहण करती है। अपने निःश्वास में ऑक्सीजन छोड़ती है।
(डॉ. जूलियस व डॉ. बुक (कृषि वैज्ञानिक जर्मनी।)

6 एक थके-मांदे व तनावग्रस्त **व्यक्ति** को स्वस्थ एवं सीधी गाय के नीचे लिटाने से उसका तनाव एवं थकावट कुछ ही मिनटों में दूर हो जाती है तथा **व्यक्ति** पहले से अच्छा महसूस करता है।
(वैज्ञानिक **पावलिटा**, चेक यूनिवर्सिटी।)

7 पृथ्वी पर आने वाले भूकंपों में से अधिकांश ई.पी. वेव्स से ही आते हैं जो प्राणियों के कल के समय उत्पन्न दारुण वेदना एवं चीखकार से उत्पन्न होती हैं।
(डॉ. भौतिकी व खगोल विभाग के रीडर, दिल्ली वि.वि.)

8 गाय के ताजे गोबर से टी.बी. तथा मलेरिया के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं।

9 गोबर में हैजे के कीटाणुओं को मारने की अद्भुत क्षमता है।
(डॉ. किंग, मद्रास।)

10 अमेरिका के वैज्ञानिक जेम्स मार्टिन ने गाय के गोबर, खमीर और समुद्र के पानी को मिलाकर ऐसा उत्प्रेरक बनाया है, जिसके प्रयोग से बंजर भूमि हरी-भरी हो जाती है।

11 शहरों में निकलने वाले कचरे पर गोबर का घोल डालने से दुर्गंध पैदा नहीं होती एवं कचरा खाद में परिवर्तित हो जाता है।
(डॉ. कांता सेन, **सराफ**, मुंबई।)

12 गाय आपका साधन भी है आरोग्य दात्री भी है। अतः गाय मारने योग्य नहीं है बल्कि हर प्रकार से गोवंश की रक्षा व उसका संवर्धन अत्यन्त आवश्यक है।
(लोक कल्याण सेतु अगस्त 2011)

साभार: वेबसाइट www.ashram.org, दिनांक 21.08.2005

गौशाला ऐसी होनी चाहिए

एक के बदले पाँच

(अमेरिका की सबसे बड़ी गौशाला)

अमेरिका के **केलिफोर्निया नगर** में एक गौशाला बनाई गई है, जिसमें **80 हजार** बूढ़ी और अपंग गायें हैं। इनमें **800 टन** गोबर और इतना ही गौ मूत्र प्रतिदिन प्राप्त होता है। इस गोबर और गोमूत्र से चलने वाली बिजली घरों में जो बिजली उत्पन्न होती है उसे **बीस हजार परिवार** काम में लेते हैं। **180 टन** गोबर की राख भी प्रतिदिन प्राप्त होती है जो उर्वरक के नाते काम आती है। हिसाब लगाने पर सामने आया कि इस गौशाला के निर्माण में खर्च **प्रत्येक डॉलर के एवज में गौशाला कों पाँच हजार हर साल प्राप्त** हो रहें हैं। पेट्रोल तथा डीजल की जो बचत हो रही है वह **इसके अतिरिक्त** है।

दान चिंतामणि में गाय की महिमा

दान चिंतामणि अतिमल्लीं को दोहला आया जब वह गर्भिणी थी कि एक हजार अच्छी-अच्छी **गर्भिणी गायों** का मैं गरीब गर्भवती स्त्रियों को दान करूँ और उसकी सास ने **एक हजार गर्भिणी सुहागिनों** को न्यौता देकर झोपड़ियों में रहने वाले गरीबों को प्रीतिभोज दिया। यह देखकर ऐसा लग रहा था मानो दरिद्रता की कमर तोड़ डालने का ही प्रबंध हुआ हो, जो सुहागिनें दरिद्र गृहलक्ष्मी सी लग रही थीं अब भाग्यलक्ष्मी बनकर बैठी थीं। एक-एक करके उनको अपने पास बुलाया और चाँदी की नकल और सोने की सींग वाली एक-एक गाय को उसने दान किया।

दान चिंतामणि पृष्ठ 103

साहित्य में गाय का महत्व

1 वाणिज्य के साथ कृषि और पशुपालन को राजाओं के द्वारा पूज्य श्री ने कहा है।
(महापुराण पृष्ठ 101, सर्ग 8)

2 लोगों में जीव दया का प्रचार करना चाहिए।
(महापुराण पृष्ठ 101, 5)

3 हे नरनाथ! जिस प्रकार गाय, पशु आदि जानवरों का पालन किया जाता है। उसी प्रकार इस समस्त धरती मंडल का परिपालन करना चाहिए।
(महापुराण / 5/04/103)

4 दूध देने वाली गाय से उसे बिना किसी प्रकार की पीड़ा पहुँचाए बिना दूध दुहा जाता है और ऐसा करने से गाय सुखी रहती हैं तथा दूहने वाले की भी आजीविका चलती रहती है।
(आदि पुराण / 16/252-255)

5 जिस प्रकार ग्वाला आलस्य रहित होकर बड़े यत्न से गायों की रक्षा करता हैं। उसी प्रकार राजा को भी अपनी प्रजा की रक्षा करनी चाहिए।
(आदि पुराण 42/139)

6 जिस प्रकार ग्वाला अपनी गायों के समूह में मुख्य पशुओं के समूह की रक्षा करता हुआ पुष्ट (सम्पत्तिवान) होता है। क्योंकि गायों की रक्षा करके वह विशाल गोधन का स्वामी हो सकता हैं। उसी प्रकार राजा भी अपनी मुख्य वर्ग की प्रमुख रूप से रक्षा करता हुआ अपने और दूसरों के राज्य में पुष्टि को प्राप्त करता हैं।
(आदि पुराण 42/143-144)

7 जिस प्रकार ग्वाला रात्रि में प्रहर मात्र शेष रहने पर उठकर जहाँ बहुत सा घास पानी होता है। ऐसे किसी योग्य स्थान में गायों को बड़े प्रयत्न से चराता है। तथा बड़े सवेरे ही वापस लाकर बछड़े के पीने से बाकी बचे हुए दूध को मक्खन आदि प्राप्त करने की इच्छा से दूह लेता है। उसी प्रकार राजा को भी आलस्य रहित होकर अपने अधीन ग्रामों में बीज देना आदि साधनों द्वार किसानों से खेती कराना चाहिए। (आदि पुराण 42/174-78)

8 उत्तम देश वह माना जाता है। जहाँ उत्तम गाय व भैंस हों (अर्थात पशु संपत्ति की प्रचुरता हो)।
(हरिवंश पुराण / जिनसेन / 19/18)

9 जब भी राजा दिग्विजय वगैरह को जाता था। तो गोष्ठ महत्तर (गायों के मुखिया) आदरपूर्वक दही, दूध सामग्री मार्ग में भेंट करते थे। और राजा की प्रसन्नता में वृद्धि होती थी। (चंद्रप्रभ चरित 13/41)

10 जिस प्रकार कोई गोपाल अपनी गाय का अच्छी तरह भरण पोषण कर उसकी रक्षा करता है और गाय प्रसन्नता से उसे दूध देकर पोषित करती है। उसी प्रकार राजा भी पृथ्वी का भरण पोषण कर उसकी रक्षा करता हैं, और पृथ्वी भी उसे अपने रत्नादि द्वारा पदार्थ देती है।
(उत्तरपुराण 55/5)

11 जीवधन (गाय, भैंस आदि) की देखभाल न करने वाले व्यक्ति की बहुत बड़ी हानि तथा मानसिक संताप होता है। एवं पशु-प्यासा रखने पर पाप बंध होता हैं। वृद्ध, बालक रोगी एवं कमजोर पशुओं का अपने बालकों के समान पोषण करना चाहिए। (वर्तमान चरित्र 7/81-82)

12 राजा की भावना यह रहती थी कि उसके राज्य में गोधनादि संपत्ति की वृद्धि तथा सुभिक्ष हों
(वरांग चरित्र 23/98-99)

13 एक व्यक्ति को शतगाय कहा गया हैं, क्योंकि उसके प्राणों का मूल्य सौ गायों के बराबर माना जाता है। (एक व्यक्ति की दुर्घटना आदि में मृत्यु होने पर 100 गायें देकर मदद की जाती थी!)
(हिन्दू सभ्यता / पृष्ठ 82 / डॉ. राजा कुमुद मुखर्जी)

14 जनपद की स्थापना के बारे में लिखा है कि जो गाँवों के लिए हितकर हो जिसकी जलवायु अच्छी हो, लुण्यको (शिकारियों) से रहित हो, जिसमें गाय, भैंस, नदी, नहर, जल आदि उपयोगी वस्तुएँ हों, जहाँ के किसान बड़े मेहनती हों, जहाँ के मालिक समझदार हों जहाँ शुद्ध स्वभाव के लोग बसते हों।
(कौटिल्य अर्थशास्त्र 6/96)

15 शुक्रनीतिसार में लिखा है कि जनता को चाहिए कि वह घी, दूध आदि में मिलावट न करे और तोल आदि का गलत प्रयोग न करें।
(शुक्रनीतिसार 1/293-311)

16 जिस गृहस्थ के यहाँ खेती, गाय, भैंस, और शाक, तरकारी के लिए सुंदर बाग तथा घर में मीठे पानी के कुएँ होते हैं। उसे सुख प्राप्त होता है।
(नीतिवाक्यामृत)

17 राजा द्वारा इतनी जमीन दान में दी जानी चाहिए जिसमें गाय के रम्भाने का शब्द सुनाई न दे, क्योंकि इतनी भूमि देने से दाता और ग्रहीता को सुख मिलता है।

18 रामचंद्र जी ने 18000 गायें दान में दी थीं।
(पद्म पुराण / रविषेण पृष्ठ 132 भाग-2 सर्ग 35 भारतीय ज्ञानपीठ)

सबकी रक्षा, गाय की सुरक्षा

1 भारतीय संस्कृति के कलंक बूचड़खानों का समाज संगठित होकर विरोध करे।
— समधिस्त जैनाचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

2 या: श्री सा: गा: (संसार में जो कुछ संपदा है वह गाये हैं।)
— जैन सिद्धांत ग्रंथ धवला जी

3 गाय पालो उसकी सेवा करो तब पता चलेगा कि क्या मिलेगा। — निहालजी

4 भूकय का एक बहुत बड़ा कारण गोहत्या है।
— बैज्ञानिक मदनमोहन बजाज

5 जन्मनि जनक द्वारा पालित हैं, केवल स्तन्य-अमृत ही पीमाता एवं सुधा पिलाकर, रक्षा करती जीवनभर।

6 शरीर के समस्त रोगों का उपचार हमारी गोमाता में विद्यमान है।

7 गौ श्रद्धा से राष्ट्र श्रद्धा उत्पन्न होती है।
— गुरुजी गोलवलकर

8 हिन्दुस्तानी सभ्यता का नाम ही गौ सेवा है।
— विनोब्रा भावे।

9 गाय की कुर्बानी इस्लाम का नियम नहीं है।
— फतवे हनकी

10 नेपाल में गौ हत्या करने पर 12 वर्ष की कठिन जेल होती है।

11 गाय और माय कभी बेचने की नहीं होती। सज्जन इन्हें कभी नहीं बेचते हैं।
— स्वामी रामसुखदास जी

12 पशु राष्ट्र धन होते हैं, कोई भी राष्ट्र अपने का नाश करके प्रगति नहीं कर सकता।

13 गोवंश न हो तो देश को नष्ट होने से कोई नहीं बचा सकता है। — महर्षि दयानंद सरस्वती

14 गाय का जीवन सुरक्षित है, तो मानव का जीवन सुरक्षित हैं। — निहालजी

15 जो लोग गाय की सेवा से जी चुराते हैं, वे परलोक गमन पर नरक में जाते हैं। — जरथुस्त

16 यहूदी बहुत ही निपुण गायपालक थे। ये सबकी तरह धर्म का कर्तव्यपूर्ण पालन करते थे।

17 गौ रक्षा का प्रश्न सम्पूर्ण देश का प्रश्न है।
— राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन

18 गोवंश हत्या करना कसाइयों का मौलिक अधिकार नहीं है। — सर्वोच्च न्यायालय 26.10.2005

19 जहाँ गाय का पालन और सेवा होती है, वहाँ सभ्यता का विकास होता है।

20 गाय बची तो मरता कौन, गाय मरी तो बचता कौन?
— लाल बहादुर शास्त्री

गाय एक फायदे अनेक

- भरत चक्रवर्ती के पास तीन करोड़ वज्र (गौशालायें) थीं।
— जैन धर्म का प्राचीन इतिहास पृ. 97
- गाय पर प्रेम से हाथ फेरने से दो महीने में उच्च रक्तचाप बिल्कूल ठीक हो गया था, गाय भी अधिक दूध देने लगी थी।
- रासायनिक खाद, कीटनाशकों का जहर भोजन के माध्यम से हमारे शरीर में पहुँच जाता है वह घी से नष्ट होकर शरीर से निकल जाता है।
- गोबर रोग-गाय, वरदान अर्थात गाय़ वरदान है।
- गोबर से लीपा हुआ घर गर्मी में ठंडा और ठंड में गर्म रहता है। रेडियो सक्रिय किरणों का दुष्प्रभाव भी नहीं पड़ता है।

- एक रूपये की चीज 10 रूपये में बेचने वाली टीवी पर अपना विज्ञापन दे सकते हैं गोपालक नहीं। फिर तो 30 रूपये लागत का दूध 300 रूपये, 1000 रूपये का घी 10000 रूपये किलो बिकेगा।
- संस्कृत में गाय को गो कहा गया है। हिन्दी में प्रेम से गौ, गऊ, गैया, गोमाता भी कहा जाता है। बछड़े के साथ गाय को धेनु कहते हैं और सभी कामनाएँ पूरी होने से कामधेनु कहते हैं।
- बछड़े को संस्कृत में वत्स कहा गया है। वत्स से ही बना है वात्सल्य अर्थात माँ का प्रेम।
- गाय का दूध बुद्धिवर्धक और सात्विक बात समझने के लिए बल देने वाला होता है।

कैंसर को पनपने से रोकता है गाय का घी

गाय के घी को पवित्र मानने की प्राचीन भारतीय परंपरा को एक नई वैज्ञानिक खोज से समर्थन मिला है। वैज्ञानिकों ने साबित किया कि गाय के घी में **कैंसर से लड़ने की अद्भुत क्षमता** होती है।

- स्तन कैंसर से बचाव
- आंत के कैंसर से सुरक्षा
- कैंसर के फैलने की गति कम करता है

1 वैज्ञानिक शोध का निष्कर्ष

राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान (एनडीआरआई), करनाल के एनिमल बायोकेमिस्ट्री विभाग के अध्यक्ष **डॉ. पी.कै. कंसल** ने अपने सहयोगियों के साथ गाय के घी पर **छह साल तक शोध** किया। शोध के निष्कर्ष बताते हैं कि गाय का घी न सिर्फ कैंसर को **पैदा होने से रोकता है बल्कि इस बीमारी के फैलने की गति को भी आश्चर्यजनक ढंग से कम कर देता है।**

अध्ययन का परिणाम (चूहों पर शोध)

सोयाबीन तेल वाला समूह	गाय के घी वाला समूह
कैंसर फैलने की गति **65.4%**	कैंसर फैलने की गति **26.6%**

2 चूहों पर किया गया अध्ययन

शोधकर्ताओं ने चूहों के दो समूहों को कैंसर पैदा करने वाली डीएमएच नामक ड्रग दी। इनमें से एक समूह को सोयाबीन तेल तथा दूसरे को गाय के घी की नियमित खुराक दी गई। दोनों समूहों में कैंसर पैदा होने और उसके फैलने की गति अलग-अलग पाई गई।

3 अन्य महत्वपूर्ण निष्कर्ष

घी खाने वाले समूह के चूहों में ट्यूमर भी पहले समूह के चूहों के मुकाबले काफी छोटे पाए गए और ये अपेक्षाकृत ज्यादा स्वस्थ थे।

4 वैज्ञानिक मान्यता

घी के रोगनाशी गुणों पर अपने तरह का पहला शोध **प्रतिष्ठित इंडियन जनरल ऑफ मेडिकल रिसर्च** में प्रकाशित होने के लिए स्वीकृत कर लिया गया है।

साभार: वेबसाइट जीवन शैली **लाइव हिंदुस्तान** डॉट कॉम, विनोद रावत, नई दिल्ली

खबरें गाय की

गाय की कविता

गाय धर्म नहीं है, गाय तो अर्थशास्त्र है।
यदि धर्म है तो उसका कारण भी अर्थशास्त्र है।
गाय राजनीति नहीं है, गाय नीति है।
गाय एक तर्क संगत आस्था है।
इसलिए गाय शब्द मात्र एक शब्द नहीं है।
गाय का सही अर्थ मात्र त्याग की साक्षात प्रथम मूर्ति है।
गाय मात्र पशु नहीं है, गाय तो मां है।
जब मैं अवोध शिशु था और मेरी मां के सीने में दूध नहीं था
तब गाय मेरी मां थी और आज जब मेरी पत्नी के सीने में दूध है,
गाय मेरे बच्चों कीं मां है।
गाय न हिंन्दू है, न मुसलमान है।
भारत की भाषा गाय एक उपनाम है। किंतु सहिष्णुता,
गाय तो विष्णु है, गाय राम है, गाय महावीर है।
गाय हमारी आस्था का प्रतीक है।

(जैन जगत 25.06.2012)

दूध बेचकर बनी करोड़पति

बड़ोदरा। साबरकांठा जिले के गांव पेंटारपुरा की रमीबेन ने 12 साल पहले जब अतिरिक्त आमदानी के लिए दूध उत्पादन शुरू किया था तो उनके साथ किसीं ने कल्पना भी नहीं की थी कि यह उनके परिवार की किस्मत ही पलट देगा। उनकी कामयाबी का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि वर्ष 2011-12 में उनका शुद्ध मुनाफा एक करोड़ 10 लाख 17 हजार 675 रूपयें था, जो कई बड़ी कंम्पनियों के सीईओ की सालाना कमाई से भी ज्यादा है। 43 वर्षीय रमीबेन कभी कॉलेज नहीं गई लेकिन उनकी उद्यमशीलता लोगों के लिए मिसाल बन गई है।

पेंटारपुरा स्थित उनके डेयरी फार्म में हर साल 5.55 लाख लीटर दूध का उत्पादन हो रहा हैं। वर्ष 2000 में ही वे गांव की दूध मंडली सें जुड़ी थीं। बैंक लोन से पांच गाय खरीदी और दूध उत्पादन शुरू किया था। आज वे **पांच करोड़ में फैला "जय रणछोड़ दूध उत्पारोड़ कैन्द"** चलाती है, जिसमें उनके पास 280 दूधारू पशु हैं। अविदक्ति आमदनी के लिए की गई यह छोटी सी पहल अब उनके परिवार का मुख्य व्यवसाय बन गया है, जिसमें 40 अन्य लोगों को भी रोजगार मिल रहा है। उनके पास दूध निकालते की अत्याधुनिक चार स्वचालित मशीनें भी हैं।

महिलाएं ही गुजरात के डेयरी उद्योग की रीढ़ हैं। राज्य की कुल 16 हजार 117 दूध समितियों में से 2 हजार 124 समितियां महिलाएं ही संचालित करती हैं। 15 जिला दूध संचों में 31.8 लाख महिलाएं हैं।

(साभार : सवेरा संकेत 09.07.2012)

फिर आया "बार्टर" का युग
(गाय देकर इंजीनियर बनते हैं)

एक जमाना था, जब मुद्रा का चलन शुरू नहीं हुआ था और वस्तु विनिमय (बार्स्टर) से सारा व्यवहार होता था। एक चीज दो और बदले में दूसरी चीज लो। इसके लिए दो व्यक्तियों की जरूरतों का मेल होना बेहद आवस्थक था। तभी आदान-प्रदान हो सकता था। कोई सोच नहीं सकता था कि आज के इलेक्ट्रॉनिक मनी ट्रांसफर के युग में भी ऐसी स्थिति आएगी जब बार्टर होने लगेगा। बिहार के बक्सर में बी.टेक की पढ़ांई करनी है तो रूपये देने की कोई ज़रूरत नहीं है। वहां का विधान 4 साल के इंजीनियरिंग कोर्स के लिए छात्र से फीस के रूप में 5 अच्छी दुधारू गाय और उनके बछड़ों को ले सकता है। यह कोई दिमागी फितूरी या सनक वाली बात नहीं है बल्कि वहां की मजबूरी है। किसानों के पास ज़मीन और पशुधन तो होता है परंतु नगद नहीं।

इन लोगों के लिए अपने बच्चों के वास्ते लाख रूपये सालाना फींस जुटा पाना संभव नहीं है। इस हालत में यह रास्ता निकाला गया कि फीस के रूप में गाय बछड़ा दे दो। वह व्यवहार जमीनों आधार से जुड़ा हुआ है। इधर गोदान करो, उधर विद्या लो।

प्राचीन गुरूकुल में भी गाय का बड़ा महत्व था। शिष्य पढ़ाई के साथ गुरू की गायों की देखभाल करते थे। राजा महाराजा दान के रूप में हजारों गाय दिया करते थे। जिनके सींग सोने से मढ़े रहते थे। क्या हम उसी आवस्था में लौट रहे हैं? बिहार का मामला कुछ ऐसा ही संकेत देता रहा हैं।

(साभार : नवभारत 20.07.2012)

गाय की सभी बस्तुए उपयोगी हैं

1. अमेरिका में अनुसंधान द्वारा पता लगाया गया है कि विटामिन बी तो गौ के पेट में सर्वदा ही रहता है। (पृ. 153)

2. जहाँ गौशाला होती है, वहाँ की हवा कीटाणुरहित शुद्ध होती है। गाय को त्यागमूर्ति कहा गया है। (पृ. 159)

3. ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों की विपरीत अवस्था में गौ-सेवा ही प्रमुख उपाय बताया गया है। (पृ. 177)

4. गोपालन उद्योग अर्थातू डेयरी फार्मिंग के लिए आयकर में छूट का प्रावधान करने के लिए कहैं। (पृष्ठ 180)

5. भारत आज भिखारी बन गया है मात्र इसलिए कि यहाँ गोवध होने लगा। (पृष्ठ 181)

6. आज हम दुग्ध उत्पादन में विश्व में दुसरी श्रेणी में आ गए हैं। प्रथम श्रेणी में अभी भी अमेरिका ही है। दुग्ध उत्पादन पिछले वर्ष 6 करोड़ टन से भी अधिक हुआ है।

7. विदेशी शासन के दौरान भी गोवंश के सहारे ही इस देश का गरीब कृषक जीवित रहा है। (पृ. 190)

8. आज गाय के महत्व को समझकर ही हम उसकी प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित करें, यह समय की माँग है। (पृ. 192)

9. गाय जिस परिवार में रहती है, उस परिवार से अत्यंत प्रेम करती है। परिवार के प्रत्येक सुख-दुःख का अनुभव करती है। (पृ. 195)

10. भारतीय गोवंश में उत्पादन की क्षमता है और समुचित सेवा-शुश्रुषा से इसे बढ़ाया जा सकता है। (पृ. 197)

11. गाय अमृत के समान दूध देती है, जो कि समस्त भोज्य सामग्री में एक करामाती चमत्कार है। (पृ. 213)

12. दुनिया में गाय ही एक ऐसा प्राणी है जिसकी सभी चीजें उपयोगी हैं। (पृ. 219)

13. यदि गाय के चारे में अधिक हरा चारा दिया जाए, तो बहुत ही अधिक मात्रा में विटामिन ए प्राप्त किया जा सकता है। (पृ. 421)

(साभार : कल्याण गौ अंक 1773 एवं 653 विश्षांक)

गाय से स्थान चमक उठता है

यदि चाहो,सतप्त सुधा से हों,
भारत के लोग नहीं, यदि चाहो,
सब स्वस्थ सुखी हों, रहे किसी को रोग नहीं।
तो गोधन की वृद्धि करो तुम, मिट जायेंगे सारे क्लेश।
गो रक्षा से ही हो सकता फिर समृद्धिशाली यह देश॥7॥

हिंदू अथवा मुसलमान हो या कोई ईसाई,
गो सेवा जो करे निरंतर वही निरापद हो भाई।
गो पालन से स्वार्थ और परमार्थ सिद्ध होता भारी,
भारत ही क्या, सकल विश्व यह हो गो सेवा व्रतधारी॥8॥

(पृष्ठ 13)

1 गौ इस देश में निरा एक पशु नहीं है। यह एक आर्थिक और सामाजिक संस्था है।
(श्री गुरु चरण दास जी मेहता)
पृ. 25

2 दूध-दही पर इंग्लैंड के बच्चों का स्वास्थ्य और संवर्द्धन निर्भर है।
(सर पुरुषोत्तम दास ठाकुरदास)
पृ. 25

3 आज भी हिंदू, सिख, जैन इत्यादि सभी गोपालन को अपना धर्म समझते हैं।
(देशरत्न श्री राजेंद्र प्रसाद जी)
पृ. 24

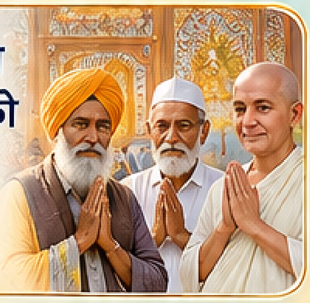

4 प्रत्येक खुशहाल व्यक्ति बाजार से दूध खरीदने के बदले अपनी ही एक अथवा अनेक गायें रखे, चाहे इसमें कुछ अधिक खर्च ही क्यों न पड़े।
(सर पुरुषोत्तम दास ठाकुरदास) पृ. 25

5 अंग्रेजी में "GOD" नाम मिलता है, जो गो + द (गो-दाता) का ही बिगड़ा हुआ रूप है।
(पृ. —)

6 गायें नित्य सुरभि हैं। उनके अंग से गुग्गल की सुगंध निकला करती है।
(पृ. 48)

7 जो लोग दूध देने वाली गाय का दान करते हैं, वे अपने समस्त संकटों और पापों से पार हो जाते हैं।
(पृ. 55)

8 गो-घृत का दान और स्वयं भी उसका भक्षण करें, तो गौओं की वृद्धि होती है।
(महाभारत अनु. 78/5/21)

9 गौओं का समुदाय जहाँ बैठकर निर्भयता से साँस लेता है, वह स्थान चमक उठता है और वहाँ का सारा पाप नष्ट हो जाता है।
(पृ. 64)

साभार : कल्याण गो अंक 1773 एवं 653 विशेषांक

बिना गाय के परिवार अधूरा

1 प्राचीनकाल में भारतवासी **गोधन** को ही मुख्य मानते थे और हर प्रकार से गो रक्षक, गो संवर्द्धन और गो पालन करते थे। (पृ. 97)

2 एक-एक बार में एक साथ **लाखों गायों** का दान किया जाता था। (पृ. 97)

3 मैंने — गाय से प्राप्त बछड़ों सहित **असंख्य गायें** दान की थीं। (राजा नृग श्रीमद्भागवत दशम स्कंध अ. 64)

4 भगवान श्रीराम ने **दस सहस्र करोड़ (एक खरब) गायें** विद्वानों को विधिपूर्वक दान दी थीं। (वाल्मीकि रामायण 1/1/94)

5 श्रीकृष्ण प्रतिदिन **13084 गायें** दान करते थे। (श्रीमद्भागवत दशम स्कंध अ. 70)

6 युधिष्ठिर के यहाँ गायों के **दस हजार वर्ग** थे, जिनमें **8-8 लाख गायें** थीं। (महाभारत विराट पर्व अ. 9) पृ.

7 **1000 गायों** के समूह को एक **"ब्रज" या "गोकुल"** कहते थे। इसी हिसाब से राजगृह के महाशतक और वाराणसी के चुलनी पिता के पास ऐसे आठ-आठ **"गोकुल"** अथवा **80-80 हजार गायें** थीं। चम्पा के कामदेव, वाराणसी के सुरदेव काम्पिल्य के कुण्डकौलिक एवं आलम्बिया के चूलशतक के पास **60-60 हजार गायें** थीं। वाणीय ग्राम के आनंद, श्रीवास्ती के नन्दिनी पिता तथा शालिनी पिता के पास **40-40 हजार गायें** थीं और पोलासपुर के शकडाल पुत्र के पास भी **दस हजार गायें** थीं। (श्वेताम्बर जैन ग्रंथ)

8 महाशतक की स्त्री रेवती के दहेज में **80 हजार गायें** दी गयी थीं। (उपासक दशांगसुतं श्वेताम्बर जैन ग्रंथ)

9 सिकन्दर जब भारत से लौटकर गये तो **एक लाख** उत्तम जाति की **गायें** साथ ले गये थे। (पृ. 99)

10 भगवान सरकार और जनता को सुबुद्धि दें, जिससे भारत में पुनः गोपालन आदि हो सकें। (पृ. 99)

11 **गाय परिवार का अंग** रही है। पति, पत्नी और शिशु केवल तीन प्राणियों में छोटे-से छोटे परिवार में भी गाय को परिवार का चौथा प्राणी मानते थे और उसी रूप में उनकी सेवा होती थी। (पृ. 113)

12 बिना गाय के **परिवार** अधूरा समझा जाता था। (पृ. 113)

13 परिवार की विशालता एवं समृद्धिशालिता **गौओं की संख्या** से आँकी जाती थी। (पृ. 113)

14 **गाय की सेवा** के साथ नम्रता, मृदुता, सहिष्णुता, धैर्य, प्रेम तथा सहानुभूति आदि गुणों का भी संबंध है। (पृ. 113)

(साभार: कल्याण गो अंक 1773 एवं 653 विशेषांक)

गाय रसायन शाला है

1. आज भारत का मुख्य प्रश्न है पर्याप्त मात्रा में दूध का मिलना और गौवंश को सुधारना। (पृ. 227)
2. हे अच्युत! मैं इस संसार में गो-धन के सदृश और कोई धन नहीं देखता हूँ। (पृ. 235)
3. जिसके पास गौएँ रहती हैं, वह तो एक प्रकार के इंद्र ही हैं।
4. प्राचीन काल में जैन श्रावक बहुत बड़े गोकुल रखते थे। जैन आगम उपासक दशा में इनके बारे में विस्तृत वर्णन मिलता है।
5. स्विट्ज़रलैंड में दूध का खूब विस्तृत व्यवसाय होता है। इस देश को पृथ्वी का गो-गृह कहते हैं। यह राज्य एक गोचर भूमि है। (पृ. 271)
6. गर्मियों में सूरज उगने के समय गाय को दुहना चाहिए और शाम के समय सूर्यास्त से पहले ही दूध दुह लें। (पृ. 278)
7. आजकल यह बात खोजकर निकाली गई है कि दुहते समय गायों को मधुर संगीत सुनाने से दूध अधिक निकलता है। इसीलिए विदेशों में गोशालाओं में रेडियो लगाए जाते हैं। परंतु हमारे यहाँ की यह पुरानी बात है। (पृ. 283)
8. गोशालाओं में सच्चे मन से काम करने पर सांसारिक बाधाएँ, साधनों का अभाव रह ही नहीं सकता। (पृ. 290)
9. अमेरिका के कृषि विभाग द्वारा प्रकाशित हुआ कि **The Cow is a Wonderful Laboratory** (गौ माता एक आश्चर्य रसायनशाला है)। (पृ. 495)

(साभार : कल्याण गौ अंक 1773 एवं 653 विशेषांक)

गाय का ऋणी है मनुष्य

गाय की महिमा एवं गौ-महत्व संबंधी विचार

1. गाय का घी गुणों में सबसे श्रेष्ठ है। वह शीतल, वात-पित्त और विष का नाश करने वाला, आँखों की ज्योति और शरीर की सामर्थ्य बढ़ाने वाला है। (चिकित्सा शास्त्र, क.ह. 162)

2. दही स्निग्ध, पाक होने पर मधुर, जठराग्नि को तीव्र करने वाला, बलवर्धक और वातनाशक है। गाय का दही पवित्र और रुचिकर होता है। (पृ. 114)

3. मनुष्य गाय के बिना दूसरे पशु का इतना ऋणी नहीं है। (डॉ. ए.ए. मैकडॉनल)

4. यूरोप में अपना नाम बनाए रखने के लिए लोग गिरजाघर बनवाते हैं, आधुनिक अमेरिका में विश्वविद्यालय निर्माण करते हैं, किंतु वर्तमान भारत में वे गौशाला बनवाते हैं और चलाते हैं। (**साम दिगिग्त वर मन**, पृष्ठ 173)

5. भारत में 15वीं शताब्दी में बहुत प्रचुर परिमाण में घी और दूध की चीजें बनती थीं। सुनते हैं कि आदमी की बात कौन कहे, राजमहल के हाथियों को भी जो खुराक मिलती थी, उसमें चावल, दूध, मक्खन और तरकारियों की अधिकता होती थी। (पृ. 173)

6. ग्वालों का धन गोकुलों के द्वारा लाखों और करोड़ों की संख्या में गिना जाता था।गोतन नाम के बड़े-बड़े व्यापारी होते थे, जिनके पास लाखों की संख्या में गायों के झुंड होते थे। (पृ. 173)

7. 1889 ई. में अमेरिका में किसोलेम, कर्नल स्टोट, मार्टिन, वर्क, बर्नेट रेनल्ड ब्रादर्स तथा दूसरों के पास 20-20 हजार गायें थीं। (पृ. 174)

8. आइने अकबरी में लिखा है कि दूध देने वाली गाय प्रतिदिन बीस सेर दूध देती थीं। (पृ. 174)

9. मनुष्य जाति के लिए गाय का आर्थिक महत्व इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि संसार की आधुनिक सभ्यता भी, जिसका अत्यंत उत्कर्ष यूरोप और अमेरिका में हुआ है, अपने को गाय का ऋणी समझती है। इस तथ्य को स्वीकार करते हुए मिस्टर हेन्ने लिखते हैं कि जहाँ गाय का पालन और सेवा होती है, वहाँ सभ्यता का विकास होता है, जमीन अधिक उर्वरा बनती है, घरों की अवस्था अधिकाधिक सुधरती है और कर्ज से पिंड छूटता है। (पृ. 175)

10. वर्ड, सुवर्ण, टालस्टाय तथा मिलो **हेस्टिंग्ट** जैसे बहुत-से दूसरे लेखकों ने अपने लेखों में गाय को मनुष्य जाति की "गूंगी माँ और दूध पिलाने वाली माँ" कहकरनिर्देश किया है। (पृ. 175)

11. कोई राष्ट्र तभी सक्षम हो सकता है, जब उसके हाथ में दूध संबंधी पौष्टिक आहार तैयार करने का ठीक प्रबंध हो। (पृ. 175)

गाय राष्ट्र को बनाती है

1 गाय प्रत्यक्ष रूप से भी **दूध, पनीर, क्रीम, मक्खन, घी** आदि दुर्बलता को मिटाने वाले स्वादिष्ट **पदार्थों** को पैदा करके राष्ट्र को बनाती है। (पृ. 175)

2 **1886 ई. में सर डब्ल्यू. बेडर्वन आई.सी.एस.** ने बताया कि हम हिंदुस्तान के ट्रस्टी होने का दम भरते हैं, परंतु हमने भारत के पशुधन की रक्षा के लिए क्या किया है? बिल्कुल ही कुछ नहीं। मुझे यह स्वीकार करने में लज्जा आती हैं कि हमारे कारण इनके उच्छेद में सहायता मिली है। (पृ. 178)

3 **1900 ई. में** मुंबई के डॉ. एच. मानो ने कहा था कि पशु जितना ही कमजोर होंगे, राष्ट्र उतना ही कमजोर हो जाएगा। (पृ. 178)

4 **1903 ई. में लॉर्ड कर्जन** ने अपने सरकारी कागजात में लिखा था कि पशुओं की दृष्टि से भारत देश पिछड़ता जा रहा है। (पृष्ठ 176)

5 **सन् 1916 ई. में कर्नल ई.डब्ल्यू. ऑलवर** ने बताया कि भविष्य में हम दूध कहों से प्राप्त करेंगे? इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर विचार करने की जरूरत है। क्योंकि यह बात अब सब पर विदित हो गई हैं कि भारत में दूध देने वाले पशुओं का शीघ्रता से ह्रास होता जा रहा है। (पृ. 178)

6 भारत जैसे दूध और शाकाहारी देश में, जाति-पाति तथा आहार संबंधी आदत के संबंध में बिना किसी भेदभाव के करोड़ों मनुष्यों के दैनिक आहार के रूप में दूध का महत्व सबसे बढ़कर है। (पृ. 179)

7 **दूध एक अद्भुत द्रव पदार्थ है।** इसमें सैकड़ों उपयोगी तत्व उचित अनुपात में मिले हुए हैं। (मिल्क एंड मिल्क केटंल, साराभाई प्रताप राय कृत, पद्मा पब्लिकेशन्स लि., मुंबई)

8 विदेशों में पशुओं की उन्नति के लिए बहुत ध्यान दिया जाता है। वहीं हिंदुस्तान में निंदनीय ढंग से उनकी अवहेलना की जाती है। (पृ. 181)

9 पश्चिमी देशों के अधिक सभ्य मनुष्य इस आर्थिक स्थिति को पहचानते हैं तथा उससे लाभ उठाते हैं। (पृ. 191)

10 यूरोप निवासी पशु सुधार में बहुत उन्नति की है। (पृ. 191)

11 जैसे माता, पिता, भाई और दूसरे कुटुंब-परिवार के लोग हैं, वैसे ही गायें भी हमारी परम मित्र (हितैषी) हैं, जिससे (अर्थात् जिनके दूध से) दवा बनती है। (पृ. 194)

आभार: कल्याण गौ अंक 1773 एवं 653 विशेषांक

गाय विटामिनों का कारखाना है

- **गो माता विटामिनों का जीवित कारखाना :–** एक विज्ञान शास्त्री ने कहा है कि गौ का पेट क्या है, विटामिनों का कारखाना है। अमेरिका के पैंसी बेनिया कॉलेज के वैज्ञानिकों ने अनुसंधान किया है कि "बी" विटामिन तो गौ के पेट में सतत़ बनता ही रहता है। (पृ. 204)
- कश्मीर में गौ पालन बहुत ही अच्छे ढंग से होता था। (पृ. 206)
- ग्रीक, रोमन, नार्डिक आदि सब लोगों ने अपने आर्य जनकों की गो संवर्धन परम्परा को अक्षुण्ण रखा था। कारण उनके पास प्रभूत गोधन था और गोदुग्ध ही उनका मुख्य आहार था। गौओं का दूध उन्हें बहुत ही प्यारा लगता था। (पृ. 206)
- इंग्लैंड के लोगों को भी देखा कि दुग्धाहारी लोग हैं। (पृष्ठ 207)
- रोमन साम्राज्य के दिनों में उत्तर यूरोप की सब जातियाँ पशुपालन पर ही जीती थीं। कुछ लोगों में अब भी यह विचित्र धारणा है कि "तामझा लालरंग की गौ के दूध से रोग हटने की बड़ी **अद्भुत शक्ति** होती है।" (पृ. 207)
- यहूदियों के आहार में मुख्यतः दूध और दूध के ही पदार्थ थे। (पृ. 208)
- यहूदी फिलिस्तीन को फतह करने के पहले ये लोग गोपाल वृत्ति वाले थे और दूध से ही निर्वाह करते थे। दूध की विपुलता को स्वर्ग मानते थे। (पृ. 208)
- दाऊद का सारा जीवन पशु संवर्धन में बीता था। (**गोपति** सम्प्रदाय पृ. 911) (पृ. 206)
- **वाविलोन** में लोगों के पास गाय-बैलों के बहुत से **झुंड** रहा करते थे। (पृ. 209)
- उन दिनों गो धन ही मुख्य धन था। सिक्कों पर गौ के ही चिह्न होते थे। (पृ. 209)
- प्राचीन मित्रदेश में गाय-बैलों का पालन बड़ी सावधानी से किया जाता था। (पृ. 210)
- गो वंश को विशुद्ध और हट्टा-कट्टा बनाये रखने के लिए बड़ा यत्न किया जाता है। (पृ. 210)
- अमेरिका के मूल प्रवासी "गोपति" कहलाते हैं। इन्होंने वहाँ गायों को पालने की पद्धति चलायी थी। (पृ. 214)
- अमेरिका में जितनी अच्छी गौएँ हैं, उतनी पृथ्वी के अन्य किसी भी देश में नहीं हैं। (पृ. 215)
- इन स्थानों के अधिकारी इन गो राज्यों के अधिपति हैं। सब सुखी सम्पन्न और सुधारप्रिय हैं, उनको सारा वैभव उन्हें गौ रक्षा से ही प्राप्त हुआ है। (पृ. 215)
- **हार्किमर** रियासत "उत्तम चकवा दही" के लिए प्रसिद्ध है। दही के व्यापार से वहाँ के गोपति करोड़पति हो गये हैं। (पृ. 215)

(साभार : कल्याण गो अंक 1773 एवं 653 विशेषांक)

गाय राष्ट्र की संपत्ति है

1. अमेरिका के लोग मक्खन को सोना समझते हैं **वहाँ का मक्खन होता भी है सोने जैसा पीला।** (पृ. 215)
2. अमेरिका में मक्खन के व्यापार से ही यहाँ सोना बरसा और लोग इतने सुखी संपन्न हुए। पहले से ही **हडसन का पश्चिम तटवर्ती प्रदेश दूध के व्यापार में सबसे श्रेष्ठ रहा है।** (पृ. 215)
3. जरथुस्ती धर्म के अनुसार **गाय जीवन की आत्मा** क्या सारे **विश्व की प्रतीक है।** (पृ. 216)
4. पशुओं का पालन और रक्षा होनी चाहिए। उस समय **गौ संपत्ति** समझी जाने लगी थी।
5. पारसी धर्म गुरूओं द्वारा प्राचीन ईरानी पद्धति के अनुसार **धन की वृद्धि के बजाय गाय की वृद्धि का आशीर्वाद** दिया जाता है। उनके प्राचीन गौवृत्ति मूलक जीवन में एक ऐसा बैंक था जिससे बड़े ऊँचे दर से ब्याज मिलता था। (पृष्ठ 217)
6. जो पुत्र अधिक कमाता है वही परिवार भर को प्यारा लगता है और हमारे **कृषि प्रधान देश** में जो पशु **सबसे अधिक उपयोगी है** स्वभावतः वही अधिक लोकप्रिय होगा। (पृ. 218)
7. प्राचीन भारत में जबकि **गायें ही राष्ट्र की संपत्ति** समझी जाती थी और गायों में ही मूल्य चुकाया जाता था क्योंकि सिक्कों का आविष्कार तब तक नहीं हुआ था। **गायों के बिना जीवन असंभव था।** पशुओं में **गाय ही सबसे शांत और सीधी कम उत्पात करने वाली** और कम से कम खर्चे में पलने वाली है। (पृ. 218)
8. गाय ही एक ऐसा पशु है जो **दैनिक उपयोगिता की दृष्टि से** सब पशुओं **से बढ़ा-चढ़ा** है। यही कारण है कि गाय समान रूप से धनी निर्धन ऊँच नीच सभी को प्रिय है। (पृ. 218)
9. तुम्हारे लिये हमने जानवर के पेट में **वह चीज दूध पैदा कर दी है जो बड़ी मुफ़ीद है।** तुम उसे पीओ। (कुरान / क.गौ. 713 का पृ. 221)
10. **"गाय धन की रानी है!"** अच्छी तरह पली हुई 90 गाय से 16 वर्ष में केवल 450 गाय ही पैदा नहीं होती बल्कि **हजारों रूपये के दूध आदि** भी मिलते हैं। (पृ. 222)
11. **भारत में गाय की प्रतिष्ठा चंद्रमा और राजा के बराबर है।** (पृ. 222)
12. अकबर की गौशाला और उसके घर में एक जोड़ी गाय थीं जिनका मूल्य 5000 **मुहर** था। अकबर बादशाह भोजन के प्रारंभ में **घी** और अंत में **दही लेते थे।** (पृ. 222)
13. समस्त संसार और पशुओं तथा मनुष्यों के जीवन का **आधार एक गाय जाति ही है।** (पृ. 226)

(साभार : कल्याण गौ अंक 1773 एवं 653 विशेषांक)

गाय दया की मूर्ति है

1 जो राष्ट्र **गौरक्षा** में प्रमाद करता है, वह इस संसार में **यश और श्री** से हीन हो जाता है। (पृ. 78)

2 जहाँ तक मुसलमान और ईसाइयों के धर्मग्रंथों में हमने सुना है, किसी के यहाँ **गोवध करना धर्म नहीं।** आवश्यक नहीं आसाम की कुछ जातियाँ ऐसी बतायी जाती हैं, किन्तु आसाम में स्वयं जाकर देखा, वहाँ कोई भी ऐसी जाति नहीं जिसके यहाँ गोवध करना धर्म हो। (पृ. 81)

3 पाण्डव शिरोमणि **अर्जुन** ने **गौरक्षा** के लिए बारह वर्षों तक वनवास की कठोर यातना स्वीकार की। (पृ. 83)

4 देश में कभी **दूध और दही** की एक प्रकार से नदियों बहती थीं, उस देश में असली दूध मिलने में कठिनाई हो रही है। यह **कैसी विडम्बना** है। (पष्ठ 85)

5 **घी** को हमारे यहाँ **सर्वश्रेष्ठ रसायन** माना गया है।

6 गाय **दया धर्म की मूर्तिवंत कविता है** यह लाखों करोड़ों हिन्दुस्तानियों को पालने वाली माता है। इस गाय की रक्षा करना ईश्वर की सारी मूक सृष्टि की रक्षा करना है। (पष्ठ 87)

7 हमारे जानवर **दुनिया के गौरव** बन सकते हैं।

8 जहाँ **अहिंसा** है वहाँ **भीतरी शांति**, भले-बुरे का ज्ञान, आत्महत्या और सच्ची जानकारी भी है।

9 गाय को अब भी गाँवों के लोग **धन** कहते हैं। (पृ. 90)

10 सभी धर्मों से यही प्रार्थना करेंगे कि आपके सभी धर्मग्रंथों में **गोमाता** का **अपार आभार** स्वीकार किया गया है। (पृ. 100)

11 गाय के दूध से निकला **घी अमृत** कहलाता है। **गोबर** में जहर खींचने की विशेष शक्ति होती है। (पृ. 124)

12 सैनिकों के **घोड़ों** को **गाय का दूध** पिलाया जाता है, जिससे वे घोड़े बहुत **तेज** होते है। (पृ. 124)

13 **रसखान** मुसलमान होकर भी **गोमाता** के **भक्त** थे। (पृ. 128)

14 कैंसर में दवा और भोजन के रूप में **काली गाय** का **दूध** और **काली तुलसी** की पत्ती होनी चाहिए। (पृ. 140)

15 गौ के समान इस संसार में कोई **क्षमाशील प्राणी** नहीं है। (पृ. 143)

16 हिंदू विवाह में कन्या पक्ष के लोग कन्यादान में आज भी **गोदान** उपहार में देना अच्छा समझते हैं। (पृ. 244)

गाय मनुष्य की सर्वश्रेष्ठ हितैषी है

1 इंग्लैण्ड में वहाँ की दुग्धशालायें हैं वहाँ के उच्च कोटि के प्रबंध को देखकर मैं आश्चर्य चकित रह गया। लंदन की "युनाइटेड" और "एक्सप्रेस" नामक दुग्धशालाओं की गायों को भोजत / स्नान की सुविधा होती हैं व ग्वालिनों के नख प्रतिदिन काटे जाते हैं। (पृ. 257)

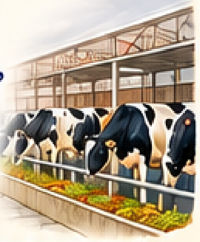

2 गाय साक्षात् धन है पुराने जमाने में किसी मनुष्य के धन और समृद्धि का अनुमात्र स्वयं उसकी या उसके द्वारा रक्षित गायों की संख्या से ही लगाया जाता था। गायें उन्हीं व्यक्तियों को दी जाती थीं, जो बहादुर और बलवान होते थे। (पृ. 259)

3 गोदान सच्चा व सर्वश्रेष्ठ धन माना गया है। (पृ. 259)

4 प्राचीन तमिल देश में गाय की प्रशंसा की जाती थी। (पृष्ठ 259)

5 गौ पालकों का जीवन शांति एवं सभ्यता से ओतप्रोत हैं। गाय, शांति, चातुर्य एवं समन्वय की प्रतिमुर्ति हैं अहिंसा की प्रतीक है। (पृ. 260)

6 9 लाख गौओं के अधिष्ठाता एक-एक व्यक्ति नन्द और उपनन्द की कथायें तो इस समय केवल इतिवृत्त की सामग्री शेष रह गयी हैं। (पृ. 260)

7 एलबुनीं के शब्दों में पानी मांगने पर अतिथि को दूध का कटोरा देने वाला भारत आज विवशतापूर्ण आँसुओं के अतिरिक्त अतिथि सत्कार की अन्य सामग्री अपने घर में नहीं देख पाता। (पृ. 260)

8 अमेरिका आज पशुओं का विशेषकर गायों का साक्षात् स्वर्ग हैं। (पृ. 265)

9 अमेरिका ने गाय से लाभ उठाकर दूध, दही, घी की नदियाँ बहायी हैं। (पृ. 264)

10 भारतवर्ष की प्राचीन संस्कृति गोरस संस्कृति थी। (पृ. 265)

11 प्राचीन समय में भारत देश आर्यावर्त, गो शास्त्र, गो कला और गो विद्या में निपुण था। साक्षात् गोलोक बन गया था। (पृ. 265)

12 आज भी अमेरिका आदि देश संसार में अपना प्रत्येक विजय का यश अपनी दुग्ध सम्पत्ति को देते हैं। जहाँ दूध वहाँ बुद्धि और जहाँ बुद्धि वहाँ विजय, दूध पर कौन मुग्ध नहीं हुआ? (पृ. 265)

13 अमेरिका के लोग सयाने नहीं हैं तो पागल भी नहीं हैं, पर गायों के पींछे पागल जरूर हैं। (पृ. 266)

14 अमेरिका में गायों की उन्नति के लिए वहाँ क्या-क्या साधन करते हैं, कैसी-कैसी साहित्य संस्थायें और प्रयोगशालाएं वे लोग चलाते हैं, यह पढ़ सुनकर हमें आश्चर्य चकित रह जाना पड़ता है। कहीं आँखों से उनकी व्यवस्था देख लें तो दंग रह जायें। (पृ. 266)

15 गाय किसी भी देश के आरोग्य और आबादी का सबसे अधिक विश्वसनीय मानक यंत्र (बैरोमीटर) है। (पृ. 266)

(साभार : कल्याण गौ अंक 1773 एवं 653 विशेषांक)

गाय मिल्क मोनो ट्रेक्टर है

1. सावधानी और प्रेम से गाय की सेवा कीजिए तो वह प्रगति की ओर ले जायेगी। (पृ. 266)

2. गाय में श्रेष्ठ यन्त्र से भी बढ़कर कार्य क्षमता है। यही तो इसकी विशेषता है इसलिए इसे हम जीवन्त जादू कह सकते हैं। (पृ. 270)

3. गाय जैसी अद्भुत चमत्कार दिखाने वाली और कौन हो सकती है? (पृ. 270)

4. गाय को हम "मिल्क मोटो ट्रैक्टर" कहते तो अतिशयोक्ति न होगी। (पृष्ठ 270)

5. गाय जगती है, प्रगति की प्रतिमा है। उसकी प्राण प्रतिष्ठा करने से जगत में हमारी प्राण प्रतिष्ठा होगी। (पृ. 271)

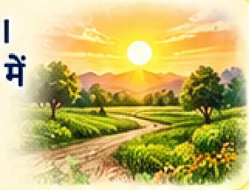

6. गाय के दूध, दही आदि से रोज की आमदनी होती हैं। (पृ॰ 274)

7. गोपालन एक रोजी और गृहस्थी पालन का प्रधान, स्वतंत्र और आवश्यक जरिया है। (पृ. 276)

8. गाय के असली दूध का, उपलों का, मक्खन, मठा, घृत आदि का मूल्य जोड़कर लगायें तो व्यय की अपेक्षा आय ही अधिक बढ़ेगी। (पृ. 276)

9. खास-खास गोपालक जातियों, इसी की आय से (गाय की आय से) घर गृहस्थी का काम चलाती हैं। शादियों करती और अन्य धंधे भी स्वतंत्रता के साथ कर रही हैं। (पृ. 276)

10. "कृषि गोरक्षा वाणिज्य वैश्यकर्म स्वभावजम्।" (पृ. 277)

11. हर एक व्यक्ति गाय पाले, यह समझे कि मुख्य और सच्चा धन तो गाय ही है और जब से धन का अर्थ रूपया मान लिया गया, तभी से अर्थ से अनर्थ होने शुरू हुए हैं। (पृ. 277)

12. गायें मनुष्य की बन्धु हैं और मनुष्य गायों के बन्धु हैं। जिस घर में गाय नहीं है वह घर बन्धु शुन्य है। (पद्म पुराण हिन्द्/सृष्टि 48/156) (पृ. 278)

13. गौऐं और स्त्रियों दोनों आर्य गृह की शोभा में अभिवृद्धि करती हैं। (पृ. 280)

14. गौं का स्थान भी मांगलिक समझा जाता है। (ऋग्वेद 61/816) (पृ. 280)

15. गाय को दुहने में जिस कोमल एवं सहिष्णु व्यवहार की अपेक्षा होती है, उसकी आशा स्त्रियों से ही की जा सकती है। (पृ. 287)

16. द्रौपदी चरवाहों और सेवकों से भी पीछे सोती और सबसे पहले जागती थी। (महाभारत / सम. 65/29 /पृ. 281)

17. अहिंसा, करूणा और सहिष्णुता का सर्वोच्च उदाहरण मानव जगत में नारी और पशु जगत में गाय है। (पृ. 281)

18. गाय रूखे, सूखे, तृण पर जीवन यापन करके भी वह बदले में संसार का सबसे अधिक शुद्ध, मधुर, रूचिकर और पौष्टिक पेय अपने दुग्ध के रूप में प्रदान करती हैं। (पृ. 281)

साभार: कल्याण गौ अंक 1773 एवं 653 विशेषांक

गाय हिन्दुस्तानी बैंक जैसी है

1 **सामूहिक (सहकारी)** तौर पर गाय का पालन किया जाय तभी तमाम मुश्किलातों को पार करने का रास्ता मिल सकता है। रक्षा, पालन, सुधार आदि। (पृ. 288)

2 किसान के लिए **पशु पालना** सहज है और **राज्य** के लिए उसे बचाना सहज है। (पृ. 288)

3 **गौ रक्षा** इस देश के नर-नारी सबके लिए बड़ा भारी कर्तव्य है। दूध, घी पर ही भारतवासियों का जीवन निर्भर है। जबसे गाय-बैल बड़ी निष्ठुरता से मारे जाने लगे हैं, तब से हमें चिंता हुई है कि हमारे बच्चे केसे जियेंगे। — **लाला लाजपतराय** (पृ. 331)

4 **हिंदुस्तानी किसान का अमानती बैंक** — इस बैंक में गोबर, घास, पत्ती, कूड़ा-कचरा आदि हर एक छोटी-बड़ी रकम जमा होती है। यह बैंक अनंत और अक्षम है। यह बैंक हमेशा चक्रवृद्धि ब्याज देता है। इस बैंक का नाम **"कंम्पोस्ट बैंक"** है। यह बैंक जोरों से चलेगा तो देश के तमाम बैंक जोरों से चलेंगे। यह बैंक धरती माता को खाद का तैयार थाल भेंट करता है। तृप्त हुई धरती, पशु, प्राणी, वनस्पति और मनुष्य के लिए अपने बढ़िया पकवान इसी बैंक में से तैयार करती है। हिंदुस्तान के किसानों के लिए तो आज यही सच्चा औद्योगिक कारोबार बन सकता है। क्योंकि इसमें प्रतिवर्ष दो अरब की कूड़े-कचरे की अमानत लेकर दस अरब रूपये की कीमत का तैयार खाद रूपी माल बनता है। इसलिए यह अमानती बैंक ही नहीं, बल्कि साथ ही **औद्योगिक** कारोबार भी है। (पृष्ठ 334)

5 **दूध और दही की अवनति** हो गई उनमें (मनुष्यों में) जीवन तत्वों (विटामिन) की कमी आ गई है। इससे जनता के आरोग्य और कार्यक्षमता में पर्याप्त क्षति पहुँचेगी। — **कर्नल फ्रॉरेस्टर, डायरेक्टर ऑफ हैल्थ पंजाब** (पृ. 336)

6 **टालस्टाय** ने भी अपनी पुस्तक **"सामाजिक अनिष्ट"** में लिखा है कि आज देश के धनी लोग, सरकार आदि कम से कम केवल अपने काम आने वाली जमीन पर से ही कब्जा हटा लें और वहाँ गोपालकों को बसा दें तो गायों की और गोपालकों की समस्या बड़ी आसानी से हल हो सकती हैं। (पृ. 373)

गाय के बिना घर श्मशान समझा जाता है

1 अमेरिका आदि देशों में प्रत्येक **6** किसानों में से **5** तो गायें रखते ही हैं तथा हर फार्म के पास औसतन लगभग **10** से **50** तक का गायों का गोल रहता है। (पृ. 373)

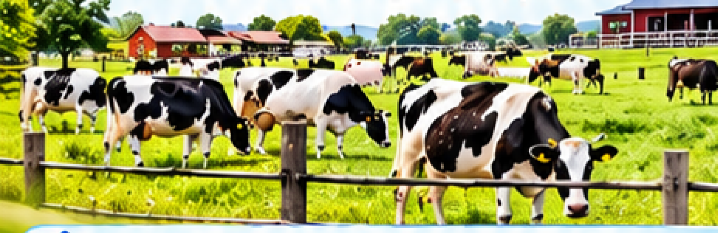

2 **बड़ौदा** में इसी उद्देश्य से (गाय पालन के) **ग्वालों** के लिए **7-8** साल से **"ग्वाटी बसाहटें"** (**ग्वालों** की बस्तियों) बसाने का काम आरम्भ किया है। राज्य की ओर से उन्हें जमीन और चारा तथा खेती उपजाने के लिए सुविधायें दी जाती हैं। उनके बालकों को पशुसंवर्धन आदि सिखाया जाता है। (पृ. 373)

3 यूरोप और अमेरिका में सामान्यतः प्रत्येक मनुष्य गाय से कमाता है, क्योंकि उसे गाय के खाने-पीने का खर्च एवं दूध का दैनिक हिसाब मालूम रहता है। (पृ. 377)

4 दूध देने वाली **"गाय एक कारखाना"** है, जो सूखी घास एवं चारे को दूध में परिणत कर देती है। (पृष्ठ 377)

5 अमेरिका में **"वर्जीनिया"** नाम का एक राज्य है, इसका उत्तरी भाग गो रक्षा, गो संवर्धन, गोपालन तथा गो **दुग्ध** व्यवसाय की दृष्टि से बड़ा महत्व रखता है। (पृ. 379)

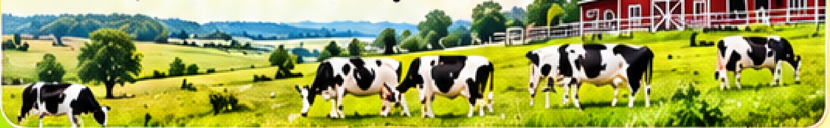

6 वास्तव में वर्जीनिया की गौशालाओं जैसी गौशाला अन्यत्र कहीं भी नहीं देखी। इसी प्रकार यहां के ये उत्साही गोपालक, दुधारू गायें आदि कहीं भी देखने को नहीं मिलेंगे। (पृ. 379)

7 जिन लोगों ने कुछ नाम कमाया है, जो अत्यंत बली और वीर हुए हैं, जिनके समाज में बाल मृत्यु की संख्या बहुत घट गयी है, जिन्होंने संसार में व्यापार धंधे पर अधिकार किया है। जो साहित्य, संगीत कला का आदर करते हैं तथा जो विज्ञान और मानव बुद्धि की प्रत्येक दिशा में प्रगतिमान हैं, वे ऐसे लोग हैं जिन्होंने गाय के दूध और दूध के बने पदार्थों का स्वच्छन्दता से उपयोग किया है। (डॉ. ई. वी. मैक कॉलम, अमेरिका) (पृ. 381)

8 आज भारत का मुख्य प्रश्न है पर्याप्त परिमाण में दूध का मिलना और गोवंश को सुधारना। (कर्नल मैक कैरिसन) (पृ. 383)

9 जिस घर में गाय नहीं होती थी उस घर को **"श्मशान"** के तुल्य समझा जाता था। (पृ. 384)

10 यूरोप के वैज्ञानिक जो विटामिन बताते हैं, खाद्य पदार्थों में वह सब दूध में है। (पृ. 384)

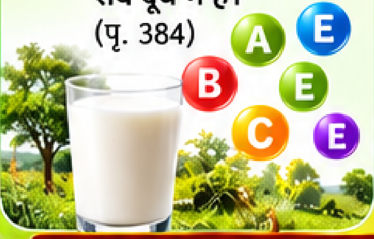

11 जिन बच्चों को निरंतर **गौ दुग्ध** पिलाया जाता है उनका शरीर सुन्दर, सुदृढ़ तथा आकर्षक एवं रोगों से मुक्त होता है। (पृ. 385)

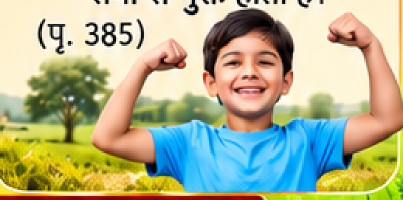

12 गो-दुग्ध में स्वर्ण के गुण भी होते हैं। (पृ. 385)

(साभार : कल्याण गो अंक 1773 एवं 653 विशेषांक)

गाय के पदार्थ राष्ट्रीय पेय हैं

1 डेढ़ मन गो दूध में **एक मासा स्वर्ण का गुण** होता है। (पृ. 385)

2 श्री गुरु ग्रंथ साहिब में लिखा है —
"दूध कटोरे गड़वे पानी, कपला गाई नाम दुह आनि" (पृ. 386)

3 **"जरा समस्त रोगाणां शान्ति कुत्बेविना सदा"**
गाय का दूध बुढ़ापे के सब रोगों को नाश करने वाला बताया गया है और इसके दही में सबसे अधिक गुण माने गये हैं। (पृ. 386)

4 **"गो बिना ताज की महारानी है!"**
(श्री मालकम, आर. पेटर्सन, अमेरिका, टेनसी के भूतपूर्व गवर्नर) (पृष्ठ 391)

5 गो के बिना मानव जाति रोग, क्षय और अन्त में विनाश को प्राप्त होगी। (पृ. 392)

6 प्रत्येक बालक का आरोग्य केवल आरोग्य ही नहीं, प्रत्युत बुद्धि उसके द्वारा पिये हुए दूध के परिमाण और प्रकार पर अधिक अवलम्बित है। भारत के ऐसे करोड़ों बच्चों के शारीरिक और प्रार्सरियत्त विकास का आधार दूध के परिमाण और प्रकार पर निर्भर है।
(लार्ड लिनलिथेगा — ए.आई.एम.एस. की कमेटी) (पृ. 391)

7 दूध, छाछ, लस्सी तथा शीतल जल ही सामान्य रीति से **"राष्ट्रीय पेय"** हो सकते हैं। (पृष्ठ 396)

8 अतिथि का पूर्ण सत्कार **गोरस** से ही किया जा सकता है। (पृष्ठ 396)

9 डॉ. ई. वी. मैककालम द्वारा **"दूध सर्वश्रेष्ठ रक्षात्मक भोजन"** माना गया है। क्योंकि इसमें सभी खाद्य तत्व विद्यमान हैं। वास्तव में दूध सर्वोत्तम अकेला भोजन है। (पृष्ठ 397)

10 राष्ट्र संच की **विशेषज्ञ** समिति दात्री सभा के शब्दों में केवल दूध ही ऐसा आहार है जो पूर्ण और सम्पन्न आहार के निकट पहुँचता है। (पृष्ठ 397)

11 अन्य देशों की अपेक्षा भारत दुग्ध तथा दुग्ध पदार्थों पर अधिक निर्भर रहता है। (पृष्ठ 397)

12 **पोषण** की दृष्टि से भारतवर्ष को सबसे बड़ी आवश्यकता इस समय अधिक और शुद्ध दूध उत्पादन करने की है। क्योंकि इससे श्रेष्ठ कोई खाद्य पदार्थ नहीं है और न कोई अन्य खाद्य पदार्थ ऐसा है जिस पर जनता का स्वास्थ्य अधिक निर्भर करता हो। (पृष्ठ 398)

13 **"गाय जगत की विलक्षण जादूगरनी है!"**
इससे जग के पाप, ताप एवं शाप शांत हो जाते हैं और सर्वत्र सुख, समृद्धि, स्वास्थ्य और सत्ता का साम्राज्य छा जाता है। यह धन, धान्य, आरोग्य, सम्पन्नता, संतति आदि देती है। (पृष्ठ 399)

(साभार : कल्याण गो अंक 1773 एवं 653 विशेषांक)

गाय दया की मूर्ति है

1 जो राष्ट्र **गौरक्षा** में प्रमाद करता है, वह इस संसार में **यश और श्री** से हीन हो जाता है। (पृ. 78)

2 जहाँ तक मुसलमान और ईसाइयों के धर्मग्रंथों में हमने सुना है, किसी के यहाँ **गोवध करना धर्म नहीं।** आवश्यक नहीं आसाम की कुछ जातियाँ ऐसी बतायी जाती हैं, किन्तु आसाम में स्वयं जाकर देखा, वहाँ कोई भी ऐसी जाति नहीं जिसके यहाँ गोवध करना धर्म हो। (पृ. 81)

3 पाण्डव शिरोमणि **अर्जुन** ने **गौरक्षा** के लिए बारह वर्षों तक वनवास की कठोर यातना स्वीकार की। (पृ. 83)

4 देश में कभी **दूध और दही** की एक प्रकार से नदियों बहती थीं, उस देश में असली दूध मिलने में कठिनाई हो रही है। यह **कैसी विडम्बना** है। (पष्ठ 85)

5 **घी** को हमारे यहाँ **सर्वश्रेष्ठ रसायन** माना गया है।

6 गाय **दया धर्म की मूर्तिवंत कविता है** यह लाखों करोड़ों हिन्दुस्तानियों को पालने वाली माता है। इस गाय की रक्षा करना ईश्वर की सारी मूक सृष्टि की रक्षा करना है। (पष्ठ 87)

7 हमारे जानवर **दुनिया के गौरव** बन सकते हैं।

8 जहाँ **अहिंसा** है वहाँ **भीतरी शांति**, भले-बुरे का ज्ञान, आत्महत्या और सच्ची जानकारी भी है।

9 गाय को अब भी गाँवों के लोग **धन** कहते हैं। (पृ. 90)

10 सभी धर्मों से यही प्रार्थना करेंगे कि आपके सभी धर्मग्रंथों में **गोमाता** का **अपार आभार** स्वीकार किया गया है। (पृ. 100)

11 गाय के दूध से निकला **घी अमृत** कहलाता है। **गोबर** में जहर खींचने की विशेष शक्ति होती है। (पृ. 124)

12 सैनिकों के **घोड़ों** को **गाय का दूध** पिलाया जाता है, जिससे वे घोड़े बहुत **तेज** होते है। (पृ. 124)

13 **रसखान** मुसलमान होकर भी **गोमाता** के **भक्त** थे। (पृ. 128)

14 कैंसर में दवा और भोजन के रूप में **काली गाय** का **दूध** और **काली तुलसी** की पत्ती होनी चाहिए। (पृ. 140)

15 गौ के समान इस संसार में कोई **क्षमाशील प्राणी** नहीं है। (पृ. 143)

16 हिंदू विवाह में कन्या पक्ष के लोग कन्यादान में आज भी **गोदान** उपहार में देना अच्छा समझते हैं। (पृ. 244)

गाय जीवन है

1 जब विज्ञान ने **दूध की उपकारिता सिद्ध** करके दिखा दी तब तुरंत अन्य देशों के लोगों ने उससे लाभ उठाना आरंभ किया। (पृ. 436)

2 **घी** को हम कम से कम खरीदारों की दृष्टि से **"स्नेह पदार्थो का बादशाह"** कह सकते हैं। (पृ. 437)

3 भविष्य में ऐसा होना चाहिए कि पानी, रोशनी, सड़क आदि की तरह ही **दूध के व्यवसाय** को भी राष्ट्र जीवनार्थ सेवा का आवश्यक अंग माना जायें और ढाँचा खड़ा किया जायें। (पृ. 439)

4 **"गाय रक्षा करती हैं", गाय मनुष्य की सर्वश्रेष्ठ हितैषी है**

तूफान, ओला, अनावृष्टि पर पानी फेर दे, किन्तु फिर भी जो बचा रहेगा उसी से गाय हमारे लिए पौष्टिक और जीवन धारण करने वाला आहार तैयार कर देगी। उन हजारों बच्चों के लिए तो **गाय जीवन** ही है, जो दूध रहित वर्तमान नारीत्व की रेती पर पड़े हुए हैं। हम उनकी सिंचाई, उसके सौन्दर्य तथा उसकी उपयोगिता के लिए उसे प्रेम करते हैं। उसकी कृतज्ञता में कभी कमी नहीं आयी, हमारे ऊपर दुर्भाग्य का हाथ तो होना ही चाहिए, क्योंकि हम लोग सालों से अपने कर्तव्य से गिर गये हैं। हम जानते हैं कि गाय हमारे एक मित्र के रूप में हैं, जिससे कभी कोई अपराध नहीं हुआ। जो हमारी पाई-पाई चुका देती है और घर व देश की रक्षा करती है।

(ई. जी. बेनेट, स्टेट डेयरी कमिश्नर, मिसूरी अमेरिका) (पृष्ठ 453)

5 **निर्धनता** के कारण **किसान** न दूध पी सकता है, न ही घी खा सकता है। उसे मजबूर होकर दूध-घी बेच देना पड़ता है। उसके पास बच जाती है केवल **छाछ**। यह **छाछ** ही किसानों के शारीरिक स्वास्थ्य और शांति का आधार है। इसी से उन्हें **विटामिन** या **पौष्टिक तत्व** मिलते हैं। छाछ के बिना किसान का न तो स्वास्थ्य ठीक रह सकता है, न वैशाख, जेठ की झुलसने वाली धूप और लू में वह काम ही कर सकता है। (पृ. 454)

6 कृषि मंत्री श्री हड़सन ने 19.05.1944 को सभा में बताया कि

"हम लोगों का उद्देश्य केवल अधिक मात्रा में दूध का उत्पादन करना ही नहीं होना चाहिए वरन दूध के गुण में भी वृद्धि हो, यह भी देखना चाहिए, ऐसा दूध होना चाहिए जिस पर जनता तथा डॉक्टर दोनों का पूर्ण विश्वास हो।"

(साभार : कल्याण गौ अंक 1773 एवं 653 विशेषांक)

गाय दुग्ध भुवन की देवी है

- भारत में जितना दूध होता है उसका **करीब 60% घी** बनाने के काम में आता है। (पृ. 510)
- दक्षिण अफ्रीका में कुछ ऐसे लोग हैं जो **मक्खन को धन** समझते हैं। (पृ. 514)
- गाय हमारे **दुग्ध भुवन की देवी हैं।** वह भूखों को खिलाती है, और बीमारों को अच्छा करती है **उसकी ज्योति चिरंतन है।**
  (सम्पादक होईर्स डेरी मैन अमेरिका) (पृ. 617)
- गौओं का समुदाय जहाँ बैठकर **निर्भयता से साँस लेता है** वह **स्थान** चमक उठता है और वहाँ का सारा पाप नष्ट हो जाता। है (पृष्ठ 51)
- गौ भारत की **राष्ट्रीय समृद्धि और सम्पन्नता की विशिष्ट प्रतीक रही है।** (पृ. 58)
- गाय के लिये क्या हिंदू क्या मुसलमान का खेत, उसके लिये **सारी धरती एक हैं।** गाय दूध देने के समय कोई भेदभाव नहीं करती, उसका दूध बिना भेदभाव के सब सेवन करते हैं। (पृ. 61)
- तुम **जग जीवन की जननी हो दूध दही देने वाली,**
  तुमसे जीवन है हम पाते दूध दही घी मक्खन खाते। (पृ. 63)

- गौओं को इतना उपयोगी बना लो कि **उन्हें काटने का साहस ही न हो।** (पृ. 80)
- **घी** को हमारे यहाँ **सर्वश्रेष्ठ रसायन** माना गया है। (आयुर्वेद ग्रंथ में) (पृ. 85)
- गाय **दया धर्म की मूर्तिमंत कविता हैं।** इस गरीब और शरीरक जानवर में हम केवल दया ही उमड़ती देखते हैं। यह लाखों, करोड़ों हिंदुस्तानियों को पालने वाली माता है। इस गाय की रक्षा करना ईश्वर की सारी मूक सृष्टि की रक्षा करना है। हमारे जानवर हिंदुस्तान और दुनिया के गौरव बन सकते हैं। जहाँ अहिंसा है वहाँ अपार धीरज, भीतरी शान्ति, भले-बुरे का ज्ञान, आत्मत्याग और सच्ची जानकारी भी। (महात्मा गांधी, पृ. 87)

तव एक गौ का मूल्यांकन **वृहत राज्याधिक्य था।**
गो ही नहीं **बढ़े-बूढ़े वृषभ** सबका उचित आतिथ्य था।।
परम्परा के **गौत्र** अब तक **वंश परिचय** दे रहा।
गौ एषणा प्राचीन आर्यों का सदावेचक रहा।।
सब वृतुच्छ है **पुत्रेषणा वित्तेषणा दारेषणा।**
सुर असुर-वन्दित **मोक्ष दायिनि** लोक ख्यात **गवेषणा।** (पृ. 102)

साभार : कल्याण गौ अंक 1773 एवं 653 विशेषांक।

गाय हमारी संस्कृति का प्राण है

1. गो रक्षा आज जिस ढंग से हो रही हैं उसे देखकर मेरा हृदय एकान्त में रोता है। (महात्मा गांधी, पृ. 120)

2. जब मनुष्य बीमार हो जाता है, तब उसको गाय का दूध पीने के लिए देते हैं। क्योंकि गाय का दूध तुरन्त बल शक्ति देता है। (पृ. 122)

3. सैनिकों के घोड़ों को गाय का दूध पिलाया जाता है, जिससे वे घोड़े बहुत तेज दौड़ते हैं। (पृ. 124)

4. बिच्छू के काटने पर गोबर लगाने से विष उतर जाता है। (पृ. 125)

5. जब गायें नहीं रहेंगी तब देश की क्या दशा होगी, कितनी आफतें आयेंगी। इसका अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। (पृ. 125)

6. जो लोग विदेशी संस्कृति सभ्यता से प्रभावित हैं तथा केवल भौतिक चकाचौंध में फँसे हुए हैं, वे गाय का महत्व नहीं समझ सकते। (पृ. 125)

7. रुपयों से वस्तुएँ श्रेष्ठ हैं, वस्तुओं से पशु श्रेष्ठ हैं, पशुओं से मनुष्य श्रेष्ठ हैं, मनुष्यों में विवेक श्रेष्ठ है। (पृ. 127)

8. महामारी प्लेग जब भारत के गाँवों में फैलती थी, तब हमारे पूर्वज गाय के गोबर से अपने घरों के प्राचीरों पर 4 अंगुल चौड़ी बड़ी रेखा लीप देते थे। (पृ. 126)

9. कैंसर में काली गाय का दूध और काली तुलसी की पत्ती 6 माह तक लेने से फायदा होता है। (पृ. 141)

10. काली गाय के घी से गठिया, कुष्ठ, जले, कटे घाव, नेत्र विकार आदि ठीक हो जाते हैं। (पृ. 143)

11. गाय हमारी संस्कृति का प्राण है। गोपालन, गोसेवा, गोदान, हमारी संस्कृति की महान परंपरा रही है। यह सेवा सुख और समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करती है। गौ के समान इस संसार में क्षमाशील कोई प्राणी नहीं हैं। (पृ. 143)

12. गौ हमारी सभ्यता और संस्कृति की मेरुदण्ड है। (पृ. 144)

13. आज भौतिकवादी चकाचौंध से हम इतने भ्रमित हो गये हैं कि हमें अपने कर्तव्यों का ज्ञान नहीं रहा। हमें यह भली भाँति समझ लेना चाहिए कि गौ के बिना हम शून्य हैं। (पृ. 144)

14. कई संक्रामक रोग तो गायों के स्पर्श की वायु लगने से ही निवृत्त हो जाते हैं। चेचक रोग भी नहीं होता है। (पृ. 145)

15. प्राचीन काल से ही ऋषि और कृषि संस्कृति की आधारशिला गाय ही रही है। (पृ. 450)

(साभार : कल्याण गौ अंक 1773 एवं 653 विशेमांक)

गाय अमूल्य रत्न है

1 यदि आप अपनी संतानों को शक्तिशाली और बलवान बनाना चाहते हैं तो उन्हें **गाय का दूध और मक्खन रोज तीन बार** खाने को दीजिए। – (मि. राल्फ ए. हेने) (पृ. 409)

2 शताब्दियों से कथाओं और उपन्यासों में वर्णित यौवन के उद्‌गम की खोज मनुष्य कर रहा है, पर उस आदर्श यौवन का निकटतम सान्निध्य रखने वाला जो पदार्थ अब तक मिल सका है, वह **गौ का दूध है।** – (फ्रेंक ओ. लोडेन) (पृ. 710)

3 **"दूध एक अमूल्य खाद्य पदार्थ है"** और सभी संभव उपायों से उसे अधिक से अधिक पीने का यत्न करना चाहिए।
– (वर्नर मैकफेडन) (पृ. 410)

4 राष्ट्र के स्वास्थ्य में यदि सुधार करना है तो **दूध पान** का और **दूध से बनी चीजों** के अधिक से अधिक व्यवहार का पर्याप्त प्रचार करना चाहिए।
– (डॉ. एच. डी. के. डायरेक्टर ऑफ नेशनल इंस्टीट्यूट फार रिसर्च इन डेयरिंग, इंग्लैण्ड) (पृ. 410)

5 **गौ** मनुष्य के लिए **अमूल्य रत्न** है। इसके **दूध से** बल, बुद्धि, आयु बढ़ती है और लोग निरोग रहते हैं।
– (व्यवस्थापक एस. बी. डेयरी दिनापुर) (पृ. 711)

6 विवाह के समय सात वचन में कन्या कहती है, **घर के घी-दूध** पर मेरा अधिकार होगा। (गाय संबंधी कार्यों पर अधिकार) (पृ. 433)

7 **गाय सुख-समृद्धि की जननी है।** कोई भी जाति या देश गाय के बिना उच्च सभ्यता नहीं प्राप्त कर सके हैं। पृथ्वी पर सबसे अच्छा पोषण गाय पैदा करती है। घास-पात खाकर आरोग्य, शांति और पोषण देने वाले दुग्धामृत देती है। गाय अपने बच्चों को पालने वाले के घर के खाने भर के लिये ही नहीं, वरं वह इतना दुग्धदान देती है कि वे लोग स्वयं खाकर बेच भी सकें। गाय के बिना खेती स्थिर और समृद्ध नहीं हो सकती है। जहाँ गाय है और उसकी उचित देखभाल होती है, वहाँ सभ्यता बढ़ती है। पृथ्वी उपजाऊ होती है, घर अच्छे बनते हैं और मनुष्यों का ऋण चुक जाता है।
– (राल्फ ए. हेने) (पृ. 434)

8 हिंदुस्तान की जैसी परिस्थिति है, उसमें अधिकांश लोगों के लिए **प्रोटीन का एकमात्र साधन दूध** है। (पृ. 435)

(साभार : कल्याण गौ अंक 1773 एवं 653 विशेषांक)

गाय हिन्दुस्तानी बैंक जैसी है

1 **सामूहिक (सहकारी)** तौर पर गाय का पालन किया जाय तभी तमाम मुश्किलातों को पार करने का रास्ता मिल सकता है। रक्षा, पालन, सुधार आदि। (पृ. 288)

2 किसान के लिए **पशु पालना** सहज है और **राज्य** के लिए उसे **बचाना** सहज है। (पृ. 288)

3 **गौ रक्षा** इस देश के नर-नारी सबके लिए बड़ा भारी कर्तव्य है। दूध, घी पर ही भारतवासियों का जीवन निर्भर है। जबसे गाय-बैल बड़ी निष्ठुरता से मारे जाने लगे हैं, तब से हमें चिंता हुई है कि हमारे बच्चे केसे जियेंगे। — लाला लाजपतराय (पृ. 331)

4 **हिंदुस्तानी किसान का अमानती बैंक** — इस बैंक में गोबर, घास, पत्ती, कूड़ा-कचरा आदि हर एक छोटी-बड़ी रकम जमा होती है। यह बैंक अनंत और अक्षम है। यह बैंक हमेशा चक्रवृद्धि ब्याज देता है। इस बैंक का नाम **"कंम्पोस्ट बैंक"** है। यह बैंक जोरों से चलेगा तो देश के तमाम बैंक जोरों से चलेंगे। यह बैंक धरती माता को खाद का तैयार थाल भेंट करता है। तृप्त हुई धरती, पशु, प्राणी, वनस्पति और मनुष्य के लिए अपने बढ़िया पकवान इसी बैंक में से तैयार करती है। हिंदुस्तान के किसानों के लिए तो आज यही सच्चा औद्योगिक कारोबार बन सकता है। क्योंकि इसमें प्रतिवर्ष दो अरब की कूड़े-कचरे की अमानत लेकर दस अरब रूपये की कीमत का तैयार खाद रूपी माल बनता है। इसलिए यह अमानती बैंक ही नहीं, बल्कि साथ ही **औद्योगिक कारोबार** भी है। (पृष्ठ 334)

5 **दूध और दही की अवनति** हो गई उनमें (मनुष्यों में) जीवन तत्वों (विटामिन) की कमी आ गई है। इससे जनता के आरोग्य और कार्यक्षमता में पर्याप्त क्षति पहुँचेगी।
— कर्नल फ्रॉरेस्टर,
डायरेक्टर ऑफ हैल्थ पंजाब
(पृ. 336)

6 **टालस्टाय** ने भी अपनी पुस्तक **"सामाजिक अनिष्ट"** में लिखा है कि आज देश के धनी लोग, सरकार आदि कम से कम केवल अपने काम आने वाली जमीन पर से ही कब्जा हटा लें और वहाँ गोपालकों को बसा दें तो गायों की और गोपालकों की समस्या बड़ी आसानी से हल हो सकती हैं। (पृ. 373)

(साभार : कल्याण गौ अंक 1773 एवं 653 विशेषांक)

गाय भारत का जीवन है

गाय की महिमा एवं गौ-संरक्षण संबंधी विचार

1. गौ ही देश का परम मंगलायन है। (पृ. 3)
2. गौ धन ही भारत का जीवन है। (पृ. 3)
3. जगत में गौ गौरव के साथ जीती रहे। (पृ. 3)
4. गौ सेवा राष्ट्रीय धर्म है। (पृ. 3)
5. गौ सेवा मुख्य कर्तव्य है। (पृ. 3)
6. गौ रक्षा अपनी जीवन रक्षा है। (पृ. 3)
7. गाय मनुष्य की धाय है। —(डॉ. विनय तोष भट्टाचार्य, एम.ए., पी.एच.डी.) (पृ. 4)
8. भारत का गोधन — एक महान राष्ट्रीय निधि है। (पृ. 5)
9. गौ से प्रेय और श्रेय की प्राप्ति होती है। (पृ. 1)
10. गौ धन भारतीय जीवन का मूलाधार है। (पृ. 1)
11. परम अध्यात्म की प्रतीक गाय है। (पृ. 1)
12. गौ माता भारत की आत्मा है। (पृ. 1)
13. गाय धरती के लिए वरदान है। (पृ. 1)
14. गौ भारतीय संस्कृति का मेरुदंड है। — डॉ. बुद्धसेन जी चतुर्वेदी (पृ. 5)
15. संसार की श्रेष्ठतम पवित्र वस्तु गाय है। (पृ. 1)
16. भक्ति, मुक्ति और शक्ति का स्रोत गौ सेवा है। (पृ. 1)
17. सच्ची सुख-शांति का मूल उपाय — गौ सेवा है। —(श्री बलराम जी सैनी) (पृ. 1)
18. जो गौ सेवा नहीं करता, वह श्री विहीन (धनरहित) हो जाता है। (पृ. 1)
19. आर्थिक समृद्धि का प्राण है गोधन। (पृ. 1)
20. राष्ट्र विकास में गौवंश का महत्वपूर्ण योगदान है। (पृ. 1)
21. है छूई-मुई काया — अच्छी हो दूध की माया से। —(श्रीमती सुनीता मुखर्जी) (पृ. 5)
22. भारतीय सिक्कों पर गाय और वृषभ के चिन्ह बने हैं। — डॉ. मेजर श्री महेश कुमार जी गुप्ता (पृ. 5)
23. राजस्थान की अर्थव्यवस्था का मूलाधार गाय है। —(श्री भंवरलाल जी कोठारी) (पृ. 5)
24. आयुर्वेदिक, धार्मिक, वैज्ञानिक एवं आर्थिक लाभ होते हैं गाय के पालन से। (पृ. 5)
25. सिख, बौद्ध, इस्लाम, हिंदू, जैन, आर्य, गुप्तवंश यहूदी, ईसाई, इंडियन, ग्रीक, रोमन, सुमेरियन, हिसाइट, इज्प्ति, अमेरिका, यूरोपियन आदि धर्मों में गाय को महत्वपूर्ण माना है। (पृ. 5)
26. तमिल, गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान आदि प्रदेशों में गाय का विशेष महत्व है। (पृ. 5)
27. भारत का राष्ट्रीय पेय है दूध। (पृ. 5)
28. गाय की हाय से बचें। (पृ. 5)

साभार: कल्याण गौ अंक 1773 एवं 653 विशेषांक।

गाय सभी का पोषण करती है

1 गायें औषधियों प्रदान करके मनुष्य को स्वस्थ एवं निरोग बनाने में सहायक होती हैं। (पृ. 23)

2 गौओं का स्पर्श सभी पापों का नाश करने वाला तथा सौभाग्य एवं मंगल का विधाधक माना गया है। गौ-स्पर्श मात्र से मनुष्य के पाप नष्ट हो जाते हैं। (पृ. 24)

3 गाय अपने दूध और घी से समस्त संसार का पोषण करती है। (पृ. 27)

4 यज्ञ के अवसर पर महाराज श्री दशरथ ने दस लाख गौएँ दान की थीं। (पृ. 28)

5 गोमूत्र में अनेक गुण बताए गए हैं। गौओं को हमारी संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। गौएँ हमारी हैं और हम गौओ के हैं। जहाँ गौएँ रहें, वहीं हमारा जीवन भी सुखमय हो, क्योंकि गौओं का हमारे जीवन में विशेष महत्त्व है। (9.45)

6 दीपशिखा गाय के घी से ही प्रज्वलित होती है।

7 गोशालाओं में गौओं को किसी प्रकार का भय नहीं होना चाहिए। वर्षभर उन्हें सर्दी, वर्षा और गर्मी से बचाने के लिए पर्याप्त साधन होने चाहिए, ताकि उन्हें तथा उनके बच्चों को किसी प्रकार का कष्ट न हो। (पृ. 47)

8 सभी गाँवों में गोचर भूमि होनी चाहिए। गाँव के चारों ओर कम-से-कम एक हजार हाथ के परिमाण में गोचर भूमि होनी चाहिए। (पृ. 47)

9 जहाँ गौओं का समुदाय बैठकर निर्भयतापूर्वक साँस लेता है, वह स्थान पवित्र एवं मंगलमय हो जाता है और वहाँ के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। (पृ. 51)

10 राजा विराट के राज्य में भी एक लाख गायें थीं। (पृ. 51)

11 तुम जग जीवन की जननी हो। तुम्हारे दूध और दही से हम जीवन प्राप्त करते हैं तथा दूध, दही और मक्खन का सेवन करते हैं। (पृ. 63)

12 शुभ भावना के प्राप्त गाय का दूध विशुद्ध एवं सात्विक आहार का प्रतीक है। यह समस्त विश्व में धर्म एवं पवित्रता की भावना को पुष्ट करते हुए अखंड दीप-ज्योति के समान कार्य करता है। (पृ. 65)

13 अर्थशास्त्र के नियमों के अनुसार गोपालन करते हुए गोवंश की **वृद्धि** करने का प्रयास करें। (पृ. 66)

14 सर अल्बर्ट हॉवर्ड ने लिखा है कि घोड़ों और बैलों के स्थान पर बिजली की मोटरों तथा तेल से चलने वाले इंजनों द्वारा खेती करने की एक हानि यह है कि इन मशीनों से गोबर और गोमूत्र प्राप्त नहीं होता।

15 गाय को पर्याप्त मात्रा में संतुलित आहार देने से उसके दुग्ध-उत्पादन में लगभग 40–50 प्रतिशत तक वृद्धि की जा सकती है। (पृ. 70)

साभार : कल्याण गौ अंक 1773 एवं 653 विशेष

गाय से सभ्यता का विकास होता है

1. सेवा में जितना वह त्याग करता है उससे कहीं अधिक प्राप्त करता है और असीम आनंद की प्राप्ति करता है। (पृ. 113)

2. गाय की कोई वस्तु निरर्थक प्रतीत नहीं होती। (पृ. 114)

3. गाय का दूध केवल शारीरिक गठन को स्थिर रखने में ही समर्थ नहीं है, वरन् शरीर के भीतर एक स्वस्थ, सबल, उदात्त एवं शांत्त मन के विकास के लिए भी सभी आवश्यक साधन जुटा देता है। (पृ. 114)

4. गो-दुग्ध आदि शारीरिक एवं आत्मिक बल भी प्रदान करते हैं। (पृ. 116)

5. गो के प्रश्वास से निकली वायु में रोग-कृमिनाशक शक्ति मानी गई है। अत: जिस घर में गौ रहती है, वहाँ अनेक प्रकार के रोग-कीटाणुओं का सहज ही अभाव बना रहता है। (पृ. 148)

6. जहाँ गौ-पालन होता है, गौ-सेवा होती है, वहीँ सभ्यता का विकास होता है। पृथ्वी श्यामला-हरि भरी और उपजाऊ होती है, घर समृद्ध और समपन्न होते हैं तथा कर्ज कम होता है। गाय मानवीय जगत के लिए ईश्वर की बड़ी देन है। (राल्फ ए. हेन कृषि शास्त्र विशेषज्ञ)

7. गाय का दूध पीने से अस्थि क्षय,पांडु रोग, रक्ताल्पता, क्षय एवं अन्य कई प्रकार के रोग दूर किए जा सकते हैं। (पृ. 151) (वर्नर मैक फेडन, मेडिकल ऑफ मिल्क, अमेरिका)

8. अमेरिका आदि देशों में लोग गाय की अच्छी नस्ल बढ़ा रहे हैं। वहॉ के डेयरी फार्मो की रिपोर्ट से पता चलता है कि एक-एक गाय 40 सेर तक दूध देती है। (पृ. 15)

9. केवल मैसूर राज्य को छोड़कर देश में कहीं ऐसा अच्छा कॉलेज नहीं है, जहाँ दुग्ध व्यवसाय पशुपालन और पशु-संवर्धन पर उपयोगी शिक्षा दी जाती हो। (पृ. 154)

10. गो-घृत जो घृतों में सर्वथा अद्वितीय है, इसलिए कि वह अंधा होने से बचाता है,मन्दागनी का नाशक है, बलप्रद है, त्रिदोषनाशक है। मेधा, लावण्य, कान्ति, ओज और तेज को बढ़ाने वाला है। कीटाणुनाशक, आयुष्यवर्धक आदि गुण होते हैं।

11. गो आदि पशुओं को धन मानना केवल हमारे ही यहाँ नहीं था। सभी प्राचीन जातियाँ वैसा मानती थीं। अंग्रेजी का PECUNIARY शब्द इसका प्रमाण है। यह शब्द लैटिन के PECUS से बना है, जिसका अर्थ है पशु। किन्तु अब अर्थ हो रहा है अर्थ-संबंधी।
(प्रवासी 13 वां वर्ष, द्वितीय खण्ड की प्रथम सं:, पृ. 160)

साभार : कल्याण गौ अंक 1773 एवं 653 विशेषांक

मानव उन्नति गौ रक्षा पर ही निर्भर है

1 गाय के बिना घर बन्धु शून्य है।
(पद्म पुराण हिंदू धर्म) (पृ. 5)

2 गाय बिना ताज की महारानी है।
(श्री माल्कान आर. पेरर्सन) (पृ. 5)

3 मानव उन्नति गौ रक्षा पर ही निर्भर है।
(श्री मिलो हेस्टिग्श) (पृ. 5)

4 गाय सुख-समुद्धि की जननी है।
(राल्फ.ए हेने) (पृ. 5)

5 दम है तब तक दया करो।
(रस्किन) (पृ. 5)

6 प्राचीन काल में जिसके पास ज्यादा गायें होती थीं, वही सम्पत्तिशाली माना जाता था। (1773 पृ. 5)

7 धार्मिक एवं पारमार्थिक दृष्टि से प्रति घर में गाय अवश्य रखनी चाहिए। (पृ. 5)

8 कोढआदि महारोगों के लिए गाय का दूध एक मात्र अनुभूत सिद्ध औषध है। (पृ. 9)

9 दही के घड़े घर में हो (अथवा 3/12/07) घी से भरा घड़ा लाओ और उसी से घी परोसो।
(अथ अबे अर्थ वे. 03/12/08)

हृदय रोग और पाडु रोग लाल रंग वाली गाय के घी से दूर होता हैं।
(अथर्व. 1/22/01)

10 पहले बड़े-बड़े गौ महोत्सव होते थे जिसमें श्रेष्ठ गौ के पीछे 100 ग्वाले 100 दुहवेहोने वाले एवं 100 मनुष्य दुग्ध पात्र लिए चलते थे प्रचुर दूध देने वाली गायों का उस समय इस रूप में सम्मान होता था। (पृष्ठ 38)

11 रोगी के उपयोग के लिए गाय दान की प्रथा थी। (पृ. 41)

12 तुझे उत्तम गौ प्राप्त हो, यह कहने की प्रथा थी। (पृ. 41)

13 राजा लोग गौओ पर कर भी इसलिए लेते थे जिससे वे अन्य राष्ट्र में गौधन की वृद्धि कर। सके (पृ. 41)

(साभार : कल्याण गौ विशेषांक 1773/653 गीता प्रेस)

दयोदय महासंघ

मूक निरीह प्राणियों पर अत्याचार रोकने का सामूहिक प्रयास करें।

इन पशुओं पर अत्याचार के कारण ही प्राकृतिक आपदाएं आती हैं,
क्योंकि प्रकृति निरीह पशुओं की पीड़ा से अवगत हो जाती हैं,
अत; मूक पशुओं की रक्षा का संकल्प ले कर वर दया के क्षेत्र में कार्य करें।
गाय बैलों को कत्लखाने जाने से रोकने का प्रयास करें।
पशु हमांरे परिवार के अंग है,
उनकी रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है।

एक गाय की करुण पुकार

सब की माँ हूँ मैं, सुन लो मेरे मन की बात।
मुझे मत मरने दो, रखलो मेरे दूध की लाज।
अपनी माँ पर बस इतना सा कर दो उपकार।
मांस मेरा नहीं कीमती,
दूध-दही से बलवान बनाती,
गोबर धरती करती उपजाऊ,
मेरा जीवन सबको अर्पित।
मुझे बचा लो मेरे भाई,
मैं हूँ आपकी प्यारी गाय।

गाय का दूध अमृत तुल्य

भारतीय परम्परा में गाय के दूध को अमृत तुल्य बताया गया है। गौमाता जीवन भर दूध देती है। यह कहा भी गया है कि गौ उत्पादों को जो करे प्रयोग, धन बचे, मिट जाये रोग। बैज्ञानिकों द्वारा यह सिद्ध करने की भरपूर कोशिश की जा रही है कि गाय के दूध में माँ के दूध के लक्षण हैं। नीनिहालों, वृद्धजनों के लिए गाय का दूध पौष्टिक आहार है। मँ के दूध के बाद गाय का दूध सबसे अधिक ऊर्जावान होता है। इसी तारतम्य में ब्रिटेन में अहिंह्रा दूध का विकास किया गया है।

गौग्रास की महिमा

तीथों में स्नान कराने, ब्राह्मण भोजन करवाने, समस्त ब्रत उपवास करने, महादान, सर्वस्व दान करने, हरि के गोवा, भूमंडल को प्रदक्षिणा, वेद वाक्यों का श्रवणपाठ, विविध यज्ञों के अनुष्ठान तथा दीक्षा करने से जो महापुण्य अर्जित किया जाता है, वह सभी महापुण्य मात्र गायों को ग्रास, चारा प्रदान करके प्राप्त किया जा सकता है।
गौग्रास के दिये बिना जो भोजन करता है वह पशुवत है।

दयोदय महासंघ की विशेषताएँ

जीव दया के प्ररिणा

जीव दया के प्रणेता 108 आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागर जी महामुनिराज ने गोवंश के संरक्षण एवं संवर्धन का शंखनाद कर अहिंसा प्रेमी समाज को प्रेरणा देकर आशीर्वाद दिया है। यदि श्री आचार्य विद्यासागर जी का आशीर्वाद नहीं होता तो दयोदय श्रृंखला की अनेकों गौशालाएं नहीं खुल पाती एवं बूढ़ी अपंग बेसहारा गायों की सेवा कभी नहीं हो पाती।

सबसे अधिक गौवंश

दयोदय की संख्या में 100 से अधिक गौशाला संचालित हैं। मध्यप्रदेश में 63 राजस्थान में 28, दिल्ली में एवं छत्तीसगढ़ में दो, उत्तर प्रदेश में दो, महाराष्ट्र में तीन, गुजरात, हरियाणा एवं तमिलनाडु में एक-एक गौशालाएं कार्यरत हैं।

गोवंश को आश्रय

इन सभी गौशालाओं में अपंग, बूढ़ी, अशक्त, कसाईयों से छुड़ाए गए गोवंश को आश्रय मिला है, अभ्यदान मिला है। इस प्रकार महासंघ गोवंश की रक्षा के लिए कृतसंकल्पित है। हमारा लक्ष है कि हम अधिक से अधिक गोवंश को वध से बचाएं और उनका पालन पोषण नूिस्वार्थ भावा से करें।

गोवंश का संरक्षण

लगभग **65,000** बेसहारा, बूढ़ी, अपंग, रोग ग्रस्त एवं चोटग्रस्त कसाइयों से छुड़ाए गए गोवंश का संरक्षण एवं संवर्धन गौशाला में किया जा रहा है, जिस पर समाज के दानदाताओं द्वारा लगभग **10,00,000 रुपए प्रतिदिन** उन पर खर्च किया जा रहा है।

समाधिस्थ परम पूज्य दिगम्बर जैनाचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के विचार दयोदय महासंघ के बारे में :-

हमारा यह प्यारा भारत वर्ष ऋषियों-मुनियों की साधना का केंद्र रहा है। भारत के उज्वल भविष्य की नीति निर्धारण का चिंतन चल रहा हैं, तब क्यों न हम ईमानदारी से आत्मावलोकन करें। भारतीय संस्कृति अहिंसक रही है। कृष्ण की कहानी यहां की माटी और पानी में धुली-मिली है। जियो और जीने दो का संदेश देने वाले हमारे देश में मांस निर्यात के निरंतर नए कसाईघरों (कत्लखानों) का निर्माण, निरीह पशुओं का बढ़ता हुआ वध, पशुओं के प्रति बढ़ती हुई कूरता/हिंसा, अपंग/वृद्ध एवं अनुपयोगी पशुओं की उपेक्षा, मांसाहार का बढ़ता प्रचलन, प्राणी जन्य उत्पाद अंड़ा अति को शाकाहारी बताने का छल आदि हिंसक कूरता तथा अनैतिक कार्य सभी अहिंसा प्रेम्मी और करुण हृदय को व्यथित कर रहे हैं। जिस गति से निरीह पशुओं का वध किया जा रहा है, यही स्थिति रही तो आगामी पंद्रह बर्षो में यह देश पशु-पक्षी विहीन हो जाएगा। संतों, महंतों, ऋषियों, मुनियों का इस ओर ध्यान आकृष्ट हुआ है।

परम पुज्य 108 दिगंबराचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के करुण हृदय से देशोत्यान के लिए मांस निर्यात प्रतिबंध की आवाज निकली, उनके शुभ आशीर्वाद एवं प्रेरणा से संस्कारधानी जबलपुर में गौशाला खोलने के लिए दिगंबर जैन समाज की भावना काफी समय से रही। जबलपुर समाज ने न्यास विलेख का निष्पादन कर उसके पंजीयन का दायित्व एवं न्यास के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु राशि/संपति एकत्रित करने का दायित्व नवयुवकों को सौंपा गया। तद्नुसार श्री दिगंबर जैन समाज जबलपुर के प्रबुद्ध सक्रिय्य, निष्ठावान, करुणावान, सक्षम नवयुवक इस न्यास के निर्माण एवं विलेख के पंजीयन का दायित्व पूर्ण कर रहे हैं। पंजीयन के उपरांत नियमों व प्रावधानों के अनुरुप न्यास का प्रबंधन एवं संचालन न्यासियों एवं प्रबंधकारिणी समिति द्वारा किया जाता है।